श्रीमुनिवर्य्य उद्दालकजीके पुत्रार्थ चिन्ताउत्पत्ति पुनः ब्रह्माजी से श्री पुत्रार्थ वरदानपाना व पिता पुत्र समागम चंद्रावती विवाह व नाशकेतका यमपुरगमन व जालन्धर विष्णुवर प्रदानादिकी उत्तम २ कथायें वर्णित हैं

सीतापुरप्रदेशान्तर्गत बरसनरडीनिवासि श्रीपण्डित
जियालालजीने भाषानुरागियों के अवलोकनार्थ
संस्कृत से भाषा छन्दों में निर्मित किया

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आइ, ई) के छापेखाने में छपा
जनवरी सन् १९०७ ई० ॥

नाशकेतोपाख्यान

सोरठा ॥

मूषकवाहनजासु वारणमुखगिरिजासुवन ॥ जियाला लपद्तासु विनयकरतकरजोरियुग १ एकरदनभुजचारि लम्बोदरअशरणशरण ॥ जियालालउरधारिनाशकेतवर्णनचहत २ भारतिपदजलमीन मनकरिनिजअवलम्बयह ॥ देहुबुद्धिअवचीन नाशकेतवर्णनकरौं ३ रुक्मसिंहासनसोह जटितरत्नमुक्तामणी ॥ लखिसुरमुनिमनमोह तामधिपुष्करशोभिजै ४ हृल्लकमध्यअनूपशोभितआसनसुभगशुचि ॥ तामधिभूपनभूपराजतसीतारामप्रभु ५ मोरमुकुटशिरधार कुण्डलश्रुतिकेयूरउर ॥ जियालालउरवार बसियनाथइहिभांतिसों ६ सोहतकरधनुतीर अघमेचकहरद्युमणिसम ॥ अस्तुतिकरतगँभीर विश्वामित्रपराशरहु ७ भरतांगदसुग्रीव सेवतसारसचरणनित ॥ चलसुतलषणअतीव सेवतप्रभुकेनलिनपद ८ इष्टदेवममनाथ बसियपूर्णविधुउरगगन ॥ धरिउत्पलपदमाथ नाशकेतवर्णनकरौं ९ ॥ दोहा ॥ सुवनधनञ्जयबन्दऊं मोपरह्वोउदयाजु ॥ नाशकेतवर्णनकरौंधरिउरदशरथला

ल १० ॥ सोरठा ॥ वन्दौंश्रीनँदलाल तड़िताम्बरमुरली मुकुट ॥ धरेंसहितवनमाल राधायुतविहरतविपिन ११ श्रीदामावलसंग विहरतवृन्दावनअवनि ॥ कीजिय कृपाअभंग जियालालमानसबसिय १२ ॥ दोहा ॥ जालन्धरभगिनीपतिहि पुटतियस्वःभजिपाद ॥ जियालालवर्णनकरत नाशकेतसंवाद १३ ककुभतीरवाहनवृषभ धारेअङ्गभुवङ्ग ॥ शीतरश्मिधरगोधबिच शीशविराजतगङ्ग १४ नागत्वकअहिमुण्डधर भस्मलगाये अङ्ग ॥ त्र्यम्बकडमरुत्रिशूलधर लियेप्रेतगणसङ्ग १५ पञ्चवक्त्रगिरिजाप्रिया शोभिततनअर्द्धङ्ग ॥ जियालालप्रभुकरियशिव हेशिवदहनअनङ्ग १६ वन्दिशिवाशिवरमाहरि गणपतिअजयुतशक्ति ॥ नाशकेतवर्णनकरौं जामेंहैबहुभक्ति १७ ॥ छंददोवै ॥ पद्मपुराणबखानकियो शुभव्यासशिष्यसुखकारी । सुनोपरीक्षितसुतअतिहर्षितमहामोदमनधारी ॥ नाशकेतसंवादरुचिरअति कहौ मुनीशविचारी । जियालालसोईवर्णतहै सुन्दरकथानिकारी १८ पाण्डुपुत्रवारणपुरराजतपांचभ्रातसुखखानी । धर्मजभीमार्जुनसहदेवहुनकुलकुन्तिसहरानी ॥ अर्जुनसुतअभिमनुबलवानातासुपरीक्षितजानी । तासुतजनमेजयगुणवानाकथासुनी सुखखानी १९ ॥ दोहा ॥ जनमेजयकरविभवअति समपुरहूतविशाल ॥ पितामृतकलखिसर्पसों कीन्होंक्रोधकराल २० अहिदाहनमखकरतभे सकलमुनीशबुलाइ ॥ स्वाहाइकलियविनयकरि आस्तीकहिहर्षाइ २१ मखकरिव्यालननाशकियश्रीजनमेजयभूप ॥ राजकरतवासवसरिस शोभाअमितअनूप २२ करत

धर्मयुतराजनृप सकलप्रजासुखकारि ॥ धर्मशीलसत्र भक्तहरि द्विजसेवकनरनारि २३ ॥ छन्दसुन्दर ॥ नृपकी नविचारजुएकदिनैहरिपद्मपदैनिजचित्तलगाई । सहरा निसुराउचलेतिहिवैतटगंगगयेअतिशैसुखपाई ॥ करि मज्जनदेहपवित्रकियो धरिध्यानतहांहरिकेगुणगाई । बहुभाँतिनपूजनदानकियो किहिभाँतिबखानिकहैद्विजगा ई २४ ॥ दोहा ॥ व्यासशिष्यअतितेजमय भजतानिरन्तर राम ॥ पूजनजपबहुविधिकरत वैशम्पायननाम २५ ॥ चौपाई ॥ तीरथतपमयनैमिषनामा । तहांविराजतमुनित पधामा ॥ वैशम्पायनकथाबखानहिं । सुनहिंसकलमुनि अतिसुखमानहिं २६ यहसुधिलहिजनमेजयराई । आ येतहँजहँकथासुहाई ॥ मुनिहिंदण्डवतकीनभुवाला । आशिषदीनमुनीशकृपाला २७ पूछिकुशलदीन्होंमुनि आसन । व्यासशिष्यशोभितव्यासासन ॥ भूपसहित अरुऋषिमुनिजेते । बैठेनिजनिजआसनतेते २८॥ दोहा ॥ वैशम्पायनसोंकही नृपतियुगलकरजोरि ॥ निगमनीति तुमजानहू सुनहुप्रार्थनामोरि २९ ॥ सोरठा ॥ नारदशा रदगाव गणपतिफणपतिवेदहू ॥ कोउअन्तनपाव ता कीकछुलीलाकहिय ३० ॥ चौपाई ॥ सुरपतिसनकआ दिगुणगावहिं । त्यागीयोगीमानसध्यावहिं ॥ ब्रह्मारुद्र जिनहिंनितध्यावैं । जियालालकोउअन्तनपावैं ३१ कहौ नाथस्वइकथासुहाई । पावनपरमचरित्रमहाई ॥ मोरज न्मप्रभुहोइसनाथा । पारहोइँभवनरकहिगाथा ३२ वै शम्पायनसुनिनृपबानी । हर्षितह्वैबोलेगुणखानी ॥ कह मुनिसुनुपांडवकुलभूषण । वरणौंकथाहरणसबदूषण ३३

कहिहौंकथापुराणचरित्रा। जासुसुनततनहोइपवित्रा॥ उद्दालकमुनिवरइकराजैं। ब्रह्मपुत्रबहुविधितपसाजैं ३४ वेदपुराणनीतिनयनागर। जानतसबहिंभेदमतिआगर॥ आश्रमरम्यसुभगअतिसोहत। सरतरुलतानिरखिमनमोहत ३५ पुष्पितफलितसदातरुलागे। ऋतुअनऋतुहिकालगतित्यागे॥ चक्रवाकवककहंसविराजत। मानहुँमुनितपचहुँदिशिछाजत ३६ आश्रमअमलदेवसरितीरा। नाशहिंजन्मसहस्रनभीरा॥ एकसमयतिहिआश्रमकाहीं। पिप्पलादआयेमुनिपाहीं ३७॥
दोहा॥ उद्दालकपरणामकिय शुभआसनबैठाइ॥ पिप्पलादकहँपूजिकै षोड़शविधिसुखपाइ ३८॥ चौपाई॥
पुनिउद्दालकपूछनलीन्हा। किहिकारणआगमप्रभुकीन्हा॥ कहमुनिसुनहुनृपतिपरवीना। उद्दालकइमिवचकहदीना ३९ पिप्पलादबोलेहरषाई। उद्दालकसुनियेमनलाई॥ अतितपकीन्ह्योतुमतपधामा। जीतेउसकलवासनाकामा ४० पुत्रविहीनजगतसुखजेते। शोभाहतनएकौतेते॥ पुत्रविहीनलखोतुमकाहीं। तातेहमआयेतुमपाहीं ४१ वंशनष्टज्यहिहोइगुसाईं। कर्मशुभाशुभसकलनशाईं॥ पितरदेवतुष्टितनहिंसोई। वंशनष्टजाकरमुनिहोई ४२ करहुविविधजपमनअभिलाषा। पुत्रहीनकहुश्रुतिनहिंभाषा॥ वचनहमारकरियमुनिनाथा। पुत्रविनानहिंहोवसनाथा ४३ उद्दालकमुनिबोलेबानी। सुनाआपुजोकहाबखानी॥ अहैपरन्तुएककठिनाई। तातेमनमानतनहिंभाई ४४॥ दोहा॥ अब्दत्रियासीमहसहमब्रह्मचर्य्यव्रतकीन॥ नानाजपसंयमकिये

अमितकष्टतनदीन ४५ ॥ चौपाई ॥ ब्रह्मचर्य्यआदिक
जोत्यागहिं । पावहिंनरकअधमगतिजागहिं ॥ पिप्पला
दहमकिहिविधित्यागी । महामोहनिशिसोवतजागी ४६
सुनिउद्दालककीशुचिबानी । पिप्पलादमनआनँदमा
नी ॥ पिप्पलादमुनिकह्योसुनाई । सन्ततिविनाधर्मनाहिं
भाई ४७ पुत्रअर्थतपभ्रष्टनलेखै । ऋतुकालेतियत
वमुखदेखै ॥ पुत्रहेतुशङ्करतपकीन्हा । कीनविवाहदोष
नहिंलीन्हा ४८ पिप्पलादबहुकथासुनाई । निजआ
श्रमगवनेमुवराई ॥ वैशम्पायनकहतवुझाई । सुनहुनृ
पतिकल्पनासुहाई ४९ ॥ छन्दमानिनी ॥ उदालविचार
कियोमनमेंपिप्पलादसुभाषिगयेजबते । बिनाशतपाम
हँहोनचहैंजिमिफूलितवारिजशीतऋते ॥ उदालविचार
करैंमनमाहँविवाहसुहोइकिहीविधिते । चलेमनमाहिंवि
चारितवै सुखदाविधिलोकहिआशुगते ५० ॥ दोहा ॥
मोहमानमददूरिभे ब्रह्मपुरीकहँदेखि ॥ ध्यानकरतविधि
कोलख्यो कियदण्डवतविशेखि ५१ ॥ चौपाई ॥ वारबा
रअस्तुतिबहुकियऊ । देखतअजसंतोषितभयऊ ॥ उद्दा
लककहँदेखिविधाता । बोलेबचनजगतसुखदाता ५२
पूँछिकुशलकहनलिनकुमारा । मुनिआगमकिहिहेतुतु
म्हारा ॥ विद्यानिपुणपुत्रगुणखानी । निजआगममामक
होंबखानी ५३ सुनिविधिआस्यअमियसमबानी । बोले
उद्दालकसुखमानी ॥ सुनुनृपमुनिउद्दालकनामा । कर
सम्पुटकियविधिहिप्रणामा ५४ दरशहेतआयउँप्रभु
पाहीं । पुत्रलालसाममनमाहीं ॥ सुनतविधाताकहो
बखानी । बदनमयंकअमियसमबानी ५५ प्रथमपुत्रउ

तपतिमुनिह्लैहै । तापीछेतियकोतूपैहै ॥ रघुकुलमाहिंहोइ इककन्या । शीतरश्मिमुखरतिसमधन्या ५६ तातेहोइ वंशतवताता । बारबारइमिकह्योविधाता ॥ आश्रमजाहुवचनममानिय । औरनकछुनिजउरमेंआनिय ५७ मनकहउद्दालकमुनिईशा । भार्य्याविनापुत्रकिमिदीशा ॥ जबसंशयनिजमनमुनिकियऊ । अन्तरधानंतबहिंविधि भयऊ ५८ उद्दालकमनभ्रमभोभारी । तबआयेनिजकुटीसिधारी ॥ जपतपबहुरिकरनमुनिलागे । रहतसदा चिन्तासोंपागे ५९ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतोपाख्याने जियालालद्विजकृतेभाषायामुद्दालकचिन्तावर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः १ ॥

चौपाई ॥ वैशम्पायनकह्योबखानी । सुनहुभूपअबकथा पुरानी ॥ उद्दालकनिजआश्रमआई । करहिंनिरन्तरजप मनलाई १ तियहितप्रेमबढ़ायोभारी । ब्रह्मवचननिज उरमेंधारी ॥ दैवयोगतेसुनुनृपवीरा । खलितअनंगभयोमुनिधीरा २ देखिकाममनगुनिविधिबानी । पद्मपत्र महँधरिमुनिज्ञानी ॥ दिवामंत्रपढ़िसंपुटकीन्हा । सकुशगंगमधिछांड़िसुदीन्हा ३ बहतपत्रपहुँचोतहँजाई । गंगानिकटपुरीरघुराई ॥ नृपतनुजाचन्द्रावतिनामा । रूपराशिशुभगुणकीधामा ४ नीलाम्बककर्बुरसमउपघन । रदपुटविद्रुमकचमेचकघन ॥ धनमधिलेपिपटीरसुलोहित । तीग्माम्बकमधिदीपजसोहित ५ सोहघोणशुकतुण्डसमाना । शब्दग्रहरुगण्डसुखदाना ॥ नागलतास्यसोहसुखकारी । छदनावलीअधिकछबिधारी ६ अ

दंनमयूखरसज्ञाधारी । धमनीशोभादरीविदारी ॥ सोह
भुजान्तरतुन्दसुहावा । करशाखापाणीछविछावा ७ पु
एडरीकसमफलकसुशोभा । रसनारवसुनिमुनिमनलो
भा ॥ जन्हूरम्भासरिससुहाई । पादांगुलीमंजुछविछाई ८
शोभितनखजिमिशिशुशशिज्योती । तनशोभात्तणप्रभा
उद्योती ॥ रूपराशिरघुतनुजाप्यारी । इहिसमअपरनद्वि
तियनिहारी ६ व्यासशिष्यकहसुनहुनृपाला । तीनिलो
कमहँद्वितियनबाला ॥ सखीसहसदशसेवाकारी । रम्भा
रतिसमशोभाधारी १० चन्द्रावतिजिमिभूषणसाजैं ।
तिहिविधिसकलसखीसँगराजैं ॥ षोड़शकलाविराजत
प्यारी । ब्रह्मचर्य्यव्रतदृढ़मनधारी ११ राजारघुत्रेता
युगमाहीं । सुनहुभूपतिहिदेवसिहाहीं ॥ आनँदप्रजा
करहिंदिनराती । अवधपुरीशोभितइहिभाँती १२ पाल
हिंप्रजानृपतिसुखराशी । जपहिंनिरन्तरहरिअविनाशी ॥
वेदविदितद्विजधर्म्मधुरीना । क्षत्रिवीरयुधिद्विजपदलीना १३ दीर्घआयुरुजक्रोधहुहानी । राजतइमिरघुनृपर
जधानी ॥ एकदिवसचन्द्रावतिकन्या । गंगाफूलगईसो
धन्या १४ कन्यासहससुसंगलवाई । मानहुँविधिनिज
हाथबनाई ॥ कुण्डलश्रवणनमुक्तमालगल । भूषणस
कलसँवारेतनभल १५ कुण्डलकंकणकिंकिणिराजैं । कन्या
सकलसुसेवासाजैं ॥ बारणवाजिकलुकसँगसोहैं । ताल
मृदंगगीतमनमोहैं १६ ध्वजापताकाचामरसाजे । संग
सुभटबहुवृन्दनगाजे ॥ ब्रह्मचर्य्यनिजमनहिंलगावत ।
सपनेहुँपुरुषनमनमहँलावत १७ सखिनप्रणामसुरसरि
हिकीन्हा । चन्द्रावतीसहितचितदीन्हा ॥ चन्द्रावतीवि

नय बहुकरिकै । गंगतरंगलखतमुदभरिकै १८ ॥ दोहा ॥
चन्द्रावतिकहँसेवहीं सकलसखीमनलाइ ॥ महामोदमं
गलभरहिं जियालालचितचाइ १९ पद्मपत्रतिहिसम
यलखि गंगमध्यसुकुमारि ॥ मानहुँसुरसरितेजअति द
हअघतिमिरतमारि २० देखिपद्मकुशसहितशुचि क
ह्योसखीसोंबैन ॥ लावहुकुबलयपत्रयह सुन्दरशोभाऐ
न २१ ॥ चौपाई ॥ सुनतवचनसखितुरितसिधाई । नलि
नपत्रअतिआतुरलाई ॥ लीन्होंतुरितहर्षिकरप्यारी ।
लीन्होंघ्राणलाइसुकुमारी २२ सुनहुपरीक्षितसुतमन
लाई । वचनविधाताभयेसहाई ॥ करिअस्नानमुदित
मनबाला । निजनिजसदनगईतिहिकाला २३ नीलपत्र
करमर्मनजाना । मुनिकरबीरजतेजनिधाना ॥ एकद्वित्रि
श्रुतिपंचममासा । बीतेषष्ठहुमासप्रकासा २४ चतुरस
खीलखिलक्षणतासू । कीन्होंरानीभवनप्रकासू ॥ रानी
नृपकहँतुरितबुलायो । तिनसोंसबवृत्तान्तसुनायो २५
अचरजभयोमहान्तपभारी । कौनभाँतिमैंकहौंविचारी ॥
कारणरच्योविधाताजोई । कम्पतगातकहतममसोई २६
नाथवंशनिजतुमअवतंशा । सकलकलंकरहितप्रभुवं
शा ॥ चन्द्रावतीगर्भयुतस्वामी । कोजानैंगतिअन्तर
यामी २७ रानीमुखइहिविधिसुनिबानी । भईभूपमन
अधिकगलानी ॥ बहुरिधीरधरिभूपतिभाखा । रक्षकवि
विधभाँतिहमराखा २८ बहुविस्तारभवनअतिभारी ।
ताअन्तरचन्द्रावतिप्यारी ॥ पुरबाहररक्षकबहुरहहीं ।
चरअरुअचरगम्यनहिंजहहीं २९ रानीसुनुममवचन
विशेखा । कुलकलंकअससुनानदेखा ॥ तातेसपदित्या

गिहौंएही। कुलकलंकदूषणनहिंजेही ३० असकहिभू
पतिनीतिउजागर । भृत्यबुलाइकहोश्रुतिआगर ॥ पा
पहितजोंघोरवनमाहीं । सुनतभृत्यइमिरुदनकराहीं ३१
भृत्यनभूपतिआज्ञापाई । मरुतवेगहयरथहिलगाई ॥
चन्द्रवतीनयहकछुजाना । ब्रह्मचर्यव्रतसदाबखाना ३२
सखीनिकटनिजलीनबुलाई । मातुउदरममपीरजनाई ॥
कहोसखीसुनिसुनुकुमारी । विधिकालिखासकैकोटा
री ३३ सखीवचनसुनिबूझतिबाला । कहौबुझाइकाह
यहहाला ॥ चन्द्रावतीपीरलखिकाँपी । चम्पककलिहि
शीतजनुब्यापी ३४ कम्पितदुखितभईअतिभारी। पु
ष्पलताजिमिपाइबयारी ॥ तिहिवैस्यन्दनसखिनविलो
का। उपजाहृदयअखण्डितशोका ३५ भपायसुसुनिभूप
कुमारी । करैविलापनदेहसँभारी ॥ मैंतौब्रह्मचर्य्यव्रत
जाना । यहकाचरितरचोभगवाना ३६ ॥ दोहा ॥ तिहि
अवसरचन्द्रावतिहि भृत्यनरथबैठाइ ॥ वेगवन्तमारुत
सरिसकाननराखोजाइ ३७ वनतजिराजकुमारिका आ
येजहँरघुराज ॥ चन्द्रावतिवनगवनसुनि व्याकुलसक
लसमाज ३८ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतो
पाख्यानेजियालालद्विजकृतेभाषायांचन्द्रावती
आरण्यवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

छन्दविष्णुपद ॥ कथासुनौभूपतिमनलाईह्वैप्रसन्नमन
में । व्याघ्रभालुकपिगजपञ्चाननचन्द्रावतिवनमें ॥
घूमतकंटकखोहनदीनद गिरिवरउरगमहा । एकाकिनी
फिरतवनमाहीं दुखकिमिजाइकहा १ ॥ दोहा ॥ मनहुंकु

रंगिनियूथतजिबनमोंपरीअकेलि ॥ दारुणदुखव्याप्यो महा विधिसुंखलियोसकेलि २ तिहिकाननमुनिइकरहें करतयज्ञजपहोम ॥ समिधपुष्पफलहितगये लखीबाल समसोम ३ ॥ चौपाई ॥ देखिदशामुनिविरतिभुलानी । रोवतदेखिरूपगुणखानी ॥ दयायुक्तमुनिदयाबढ़ाई । निकटजाइपूँछामुनिराई ४ पुत्रीमोसनकहौबखानी । किहितनुजातुमअहौसयानी ॥ कासँगभयोबिवाहतुम्हारा । नरकिन्नरीरूपतुमधारा ५ मृदुलवचनबोलीपिकबयनी । बोरिअमीरसजनुमृगनयनी ॥ आदिअन्तसबकथासुनाई । विस्मयहर्षभयेमुनिराई ६ सुनतवचनमुनिवरविज्ञानी । सुताबोलिनिजआश्रमआनी ॥ पुत्रीसमपालनमुनिकरई । चन्द्रावतीशोकनहिंहरई ७ इहिविधिबीतत भेनवमासा । दशममासपुनिकियोप्रकासा ॥ दशममास जबहींनृपआयो । नासाअग्रपुत्रसोजायो ८ जबहिंजन्मसुतभयोनृपाला । नामकरणमुनिकीनकृपाला ॥ नाशकेतअसनामबखाना । तेजवन्तरविसमबलवाना ९ कछुकदिवसबीतेइहिभाँती । चन्द्रावतिहिलाजअधिकाती ॥ लैउछंगनिजपुत्रहिबाला । अतिहिदुखितह्वैकहोबिहाला १० हे सुतभाग्यहीनतुमभयऊ । नृपतनुजारोदनकरिकह्यऊ ॥ पुत्रतुमहिहितममपितुत्यागा । पापकलंकसकलकुललागा ११ असकहिकोमलकिशलयलाई । रचोमँजूषास्वकरबनाई ॥ द्वारएकरचिविविधविधाना । राखिमँजूषाबालसुजाना १२ गङ्गानिकटतुरितचलिआई । करिप्रणामबहुविनयसुनाई ॥ पुत्रवदन लखिरोदनकरई । महाशोकनिजउरमेंभरई १३ जासु

वीर्यकेतुमसुतअह्यऊ। ताकहँमिलौजाइहमकह्यऊ॥॥ इहिविधिसोबहुवचनसुनावति । शोकाम्बुधिकरपारनपावति १४ ॥ दोहा ॥ गङ्गहिवहुरिप्रणामकरि दीन मँजूष वहाइ ॥ पुत्रसहितमँजूषसो पहुँचोतहांसुजाइ १५ उद्दालकआश्रमनिकटगयोमँजूषासोइ ॥ चन्द्रावतिअस्नान करिमुनिआश्रमगैरोइ १६ ॥ चौपाई ॥ सुनुजनमेजयकथा रसाला। बसहिंगङ्गतटमुनिउद्दाला ॥ करिअस्नाननि करिमुनिधीरा । लागेकरनजापरघुवीरा १७ तिहिअव सरमुनीशउद्दाला । लखोमँजूषागंगविशाला ॥ आज्ञा दियोशिष्यइककाहीं । लायोतुरतमँजूषाताहीं १८ लखहिंमँजूषहिसकलमुनीशा । सोसुखकहिनजाइअवनीशा ॥ हृदयलगाइसुतहिसबलेहीं । चिरंजीवकहिआशिषदेहीं १९ करिजपउद्दालकतहँआये । बालकलैनिज कुटीसिधाये ॥ उद्दालकपुनिआशिषदीन्हा । ममआश्रमसुखदायककीन्हा २० कन्दमूलफलअमितसुहाये । खाउइहांचिरवसिमुदपाये ॥ इहिविधिमहाअनन्दवढ़ावत । भाँतिभाँतिकेलाड़लड़ावत २१ ॥ दोहा ॥ भयो पुत्रइषुवर्षकोमुनिनआचरणधार ॥ कन्दमूलफलपितु सहित करतनित्यआहार २२ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतोपाख्यानेजियालालद्विजकृतेभाषायांपितापुत्रसमागमोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

दोहा ॥ चन्द्रावतिसुतकोतजो जादिनसोंकुरुराइ ॥ महादुखितकाननफिरत इतउतअतिबिकलाइ १ ॥ चौपाई ॥ सारिशब्दकरिआरतबानी । पिकबैनीरोदतअविखा

नी ॥ तहांलखीइककुटीसुहाई । उद्दालकमुनिकीछबिछाई २ तहांदेखिनिजतनयसुहावा । उरआनँदभरिवचनसुनावा ॥ हे सुतयहकिहिपर्णकुटीरा । हरहुशोकममउरमतिधीरा ३ देखितुमहिंसुतप्रीतिमहाई । ममबालकअनुहारिसुहाई ॥ नाशकेतसुनिकहोबखानी । उद्दालकममपितासुजानी ४ तिनकीकुटीअहैसुखकारी । पुण्यपयोनिधिपापप्रहारी ॥ कन्दमूलफलपूजाहेता । लेनगयेमुनिवरकुलकेता ५ मातपिताआवनअबचहई । पात्रशोधकरिबेममअहई ॥ पात्रशोधजोकरौंनमाता । मोकहँकुटीलेइनहिंताता ६ चन्द्रावतिसुनिसुतमुखबानी । सकलपात्रशोधेनिजपानी ॥ सुन्दरशालादियोबनाई । गंगानिकटआपुचलिआई ७ ॥ दोहा ॥ तिहिअवसरउद्दालमुनि आयेआश्रमकाहिं ॥ शालादेखिबिचित्रअति भेप्रसन्नमनमाहिं ८ निजपुत्रहिउरलाइमुनि बहुविधिआशिषदीन ॥ पुत्रभक्तितुमअतिकरी शालारचि सुखभीन ९ ॥ छन्द विष्णुपद ॥ नाशकेतकरजोरिबखानासुनुविनतीताता । मैंनहिंविरचीशालबनाईविरचीममनाता ॥ उद्दालकतबपूँछतसुतसोंमातुकहांपाई । नाशकेतत्रकहोबखानीगंगकूलमाई १० नित्यक्रियाकरिमुनिवरबोलेअमृतसमबानी । सुनहुतातमातानिजकाहींलाउइहांआनी ॥ सोनमिटैजोरचीविधातासुनिवचगेतहँवाँ । मातानिकटगयेहरषाईगंगानिकटजहँवाँ ११ करिदण्डवतकहीमृदुवाणीचलुआश्रममाता । कन्दमूलफलकरहुअहाराआयसुममताता ॥ सकलमुनिनकरदर्शनकरऊरूपमनहुँभेदा । पितानिकटतुमसुखसोंरहियें

ममहरियेखेदा १२ ॥ दोहा ॥ सुतअयुक्तवचकहहुकिमि
तुमहौसुकृतनिधान ॥ मातुपितादीन्होंनहींकियोनकन्या
दान १३ नाशकेतपितुनिकटगे कहेमातुकेबैन ॥ उद्दाल
कसुतकहँतुरतबहुरिपठायेलैन १४ ॥ चौपाई ॥ नाशकेत
बहुविनयसुनाये। लियेमातुकहँआश्रमआये ॥ सुतसोंक
हमुनीशयुतनेहा । किहिप्रकारमातातवएहा १५ पूछहु
सकलकथाविस्तारी । तातजौनविधितवमहतारी ॥ उद्दा
लककीसुनिमृदुबानी । नाशकेतनिजमातुबखानी १६
माताकहौकाहिकीजाई। सदनत्यागिकाननकिमिआई ॥
सुनहुपुत्रमैंकहौंबखानी।कुवलेभवकीअकथकहानी १७॥
दोहा ॥ प्रथमकोकनदपत्रकी कथाकहीसवभाखि ॥ सुनि
सांचीमुनिमानिकै ब्रह्मगिराउरराखि १८ तातपुत्रतुमर
घुसुता ब्रह्मचर्यतवमात ॥ रहौउभयआश्रमबिषेहमरघु
नृपपहँजात १९ ॥ चौपाई ॥ उद्दालकमुनिमुनिसँगलयऊ।
जहँरघुराजतहांचलिगयऊ ॥ मुनिहिदेखिद्वारस्थिततब
धायो । राजारघुकहँखबरिजनायो २० सुनतभूपधाये
तजिआसन। मगनप्रेमकहिआवैकासन ॥ कियदण्ड
वतभूपभूपरिकै । मुनिअशीषदीन्होमुदभरिकै २१ मु
निकहँसिंहासनबैठायो । षोड़शभांतिपूजिसुखपायो ॥
दानधर्मकीन्हेहमजोई । फलयुतभयेआजुमुनिसोई २२
हे मुनिमोकहँसेवकजानी। निजआगमप्रभुकहौबखानी॥
आज्ञाजौनरावरेहोई । शिरधरिकरौंनाथमैंसोई २३ ध
र्मधुरन्धरतुमभूपाला । लाजहिंप्रभुतालखिदिगपाला ॥
महासुजानदयालसुभाऊ। कन्याएकदेउममराऊ २४ सु
निमुनिवचनभूपकहवानी। कन्यानहिंअसमुनिज्ञानी॥

लेहुपुरटमणिधनविधिनाना । गजतुरंगवाहनविविधाना २५ ॥ दोहा ॥ सर्वसुदेहौंतुमहिंमुनि तनुजाममगृहनाहिं ॥ सुनिउद्दालकवचनइमि दियउत्तरनृपकाहिं २६ ॥ छंद माधवी ॥ कछुचाहियनाहिंनतापसकोतपचाहियराउरमानसहीं । तनुजानृपदीजियमाँगतहौंसुनिबातमुनीशत्तितीशकही ॥ गतिजानतहौसबलोकनकीतनयामममधाममुनीशनहीं । नरनाथकहीइहिभांतिजबैमुनिनाथसुगाथविचारिकही २७ ॥ दोहा ॥ अब्दछियासीसहसनिज कहोतपस्याकाहिं ॥ पिप्पलादजिहिविधिकहो गोजिहिविधिविधिपाहिं २८ विधिवाचाजिहिविधिकही जिहिविधिआश्रमआव ॥ कमलपत्रनिजरेतकी कथानृपहिंसमुझाव २९ चन्द्रावतिकरगर्भकहि जन्मसुवनगुणखानि ॥ नाशकेतअसनामवर कहोमुनीशबखानि ३० ॥ चौपाई ॥ पुनिजिहिभांतिमँजूषापायो । चन्द्रावतिकरदुःखसुनायो ॥ चन्द्रावतिआगमनबखाना । राउसभासदसुनिसुखमाना ॥ ३१ सुनिमुनिवचनराउहरषाने । सकलसभासदआनँदमाने ॥ कहउद्दालकमुनिनृपपाहीं । सुतामँगावहुद्रुतरथमाहीं ३२ सुनिमहीपनिजबन्धुबुलाई । मुंत्तसाजिरथवनहिंपठाई ॥ आयसुपाइचलारथहांकी । वेगवन्तआयोबनताकी ३३ नाशकेतकीअस्तुतिकरिकै । उभयचढ़ायोद्रुतमुदभरिकै ॥ हांकिरथहिद्रुतअवधहिआये । नरनारीदेखनहितधाये ३४ तनयासहसुतभूपतिभेंटे । दुसहविरहदारुणदुखमेटे ॥ मिलेसकलपुरलोगलुगाई । हर्षविषादनकछुकहिजाई ३५ उपरोहितहिबोलिनृपलीन्हा । सादरकथासकलकहिदीन्हा ॥ विप्रनबोलिलग्नठह

राई। कारजअपरकियेभुवराई ३६ नानाभांतिवस्तुसब साजी। रथपालकिवाहनगजवाजी॥ श्रुतिविधिपाणिग्र हणसुकीन्हा। दायजधेनुअश्वगजदीन्हा ३७ जोजोव स्तुदीनअवनीशा। दियोयाचकनसकलमुनीशा॥ कर सम्पुटकरिनृपतिसुजाना। मुनिहिवन्दितनसुफलसुमा ना ३८ स्यन्दनएकभूपमँगवायो। मारतण्डसमतेजसुहा यो॥ मणिमुक्ताप्रबालबहुराजैं। अरुणअनेकमयूषनि साजैं ३९॥ दोहा॥ रथचढ़िमुनितियसुतसहित नृपक हँदियोअशीश॥ सोहतविधुकौमुदिसरिस पहुँचेकुटीमु नीश ४०॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतोपाख्याने जियालालद्विजकृतेभाषायांचन्द्रावतीविवाहवर्णनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ४॥

दोहा॥ सुनुभूपतिमनलाइकै आयेब्याहिमुनीश॥ पुत्र तीययुतघोरतपकरतभयेअवनीश १॥ चौपाई॥ एकवा रमुनिसुवनबुलायो। करिदण्डवततुरितसोआयो॥ जा हुपुत्रकाननहिसिधाई। कन्दमूलफललावहुजाई २ ना शकेतपितुआयसुपाई। सरवरनिकटपहूँचेजाई॥ कुसु मितभूरुहसकलसुहाये। शुकचकोरषटपदखविछाये ३ फूलितफलितवेलिअवलोकी। मणिसोपानविचित्रत्रि लोकी॥ त्रिविधसमीरबहतसुखकारी। कामक्रोधमदह रशुचिवारी ४ देखितड़ागमहासुखखानी। नाशकेतहर षेमनबानी॥ मनमहँअतिआनन्दबढ़ाये। मज्जनहे तुतहांचलिआये ५॥ दोहा॥ करिमज्जनफलफूललै त र्पणादिविधिकीन॥ योगमार्गशोधतभये शून्यमहलमन

दीन ६ ॥ चौपाई ॥ इहिविधिबीततभेषटमासा । गगन भुवनबिचलखततमासा ॥ लागिसमाधिअखण्डविशाला । विहरतमधिब्रह्माण्डनृपाला ७ छटेमासनिजसुरति उतारी । पितावचनसुमिरोतिहिबारी ॥ समिधपुष्पफल कोमलआनी । पितहिनमतजोरेयुगपानी ८ कहपितु किमिपदर्शीशनवाये । छठेमासमुखआइदिखाये ॥ देव पितृजपतपमखसाजा । इनकातुमसुतकीनअकाजा ९ मोरतनयतुमअतिअज्ञाना । नाशकेतसुनिवचनबखाना ॥ सुनहुपिताममवचनसुहाये । हमतौयोगमाँभमनलाये १० ॥ सोरठा ॥ करहुयोगमुनिनाथ जपतपव्रतकिमिकीजिये ॥ जरामरणकरसाथ विनायोगछुटिहैनहीं ११ तैंदेखोबहुयोग उद्दालकसुतसनकही ॥ येभूठेसबलोग जप तपसंयमकरतजे १२ नारदगणपमहेशतुराषाडसनकादि अज ॥ वरणिसकैंनहिंशेशतापसअगणितकरततप १३ ॥ दोहा ॥ करहिंविविधसंयमसकलहमहिंसिखावहुज्ञान ॥ गुरुसमसिखममदेतशठमहामूढ़अज्ञान १४ पितापुत्रसन भांतिबहुहोतभयोसंवाद ॥ जानिअवज्ञापुत्रकृतउपजा हृदयविषाद १५ घोरशापतोकहँदिहौं निन्दतपितरअजान ॥ ममशासनतेजाइअब लखौसमनअस्थान १६ ॥ छन्दतोटक ॥ पितुशापकठोरसुनीजबहीं । अवनीमहँकंपि गिरोतबहीं ॥ मुखबातनआवतअतिजलं । मुनिनाथहु देखिभयेविकलं १७ ममशापवृथापुनिहोइवृथा । इहि भांतिमुनीबहुबारकथा ॥ सुतप्राणसमानअहौहमहीं । यहशापसुहोइवृथातुमहीं १८ किहिभांतिकहौंयमताड़नको । बपुछिन्नहुभिन्नविदारनको ॥ तुमजोदुखकोसुत

जाइलहा। अधमाधममोसमकौनअहा १९ मुनिबात सुनीमुनिसूनुजबै। करिचेततनयउठिबैठतबै॥ पितुबातप्रमाणंकरौंअबहीं। तबपद्मपदैलखिहौंतबहीं २० नहिंशोककरौममहेतुमुनी। समुझाइकहोपितुकाहिंपुनी॥ पितुआयसुकारकधर्मसुतै। जनुकर्मकियोतपजापनितै॥ २१ मगपालकसत्यवहीसुतहै। विनसत्यवृथाजगजीवतहै॥ बलसत्यअहीमहिभारधरा। बलसत्यविधीपरपंचकरा २२ बलसत्यशिखीअतिज्वालधरै। बलसत्यशिवापति नाशकरै॥ बलसत्यमहीनृपजीततहै। बलसत्यसबैदुखबीततहै २३ बलसत्यसुधर्मविराजतहै। बलसत्यसबैसुखसाजतहै॥ बलसत्यअकाशनिरन्तरहै। बलसत्यसुरौनभअन्तरहै २४ बलसत्यदिनेशप्रकाशकरै। बलसत्यसुधापदअमृधरै॥ बलसत्यजगैप्रभुपालतहै। बलसत्यहिकालहुशालतहै २५ बलसत्यहियोगहुयज्ञकरै। बलसत्यहिजाइपदैसुपरै॥ बलसत्यहिचारिपदारथहै। बलसत्यमदादिबिदारतहै २६ बलसत्यगृहीकृतकारजहै। बलसत्यमहामुदधारजहै॥ बलसत्यनभैउडुराजतहै। बलसत्यनवग्रहछाजतहै २७ बलसत्यहिपुण्यप्रभावभरा। बलसत्यहिलोकनधारधरा॥ कछुसत्यसमानअगाधनहीं। इहिभांतिमुनीसुतभाषिकही २८॥ दोहा॥ नाशकेतकहपितासन आज्ञादीजियतात॥ हर्षसमयविस्मयकरतयहअचरजकीबात २९॥ चौपाई॥ पिताहिप्रणामकियोकरजोरी। नाशकेतचलिभयेबहोरी॥ दिव्यमन्त्रमनसुमिरणकरिकै। पहुँचतभयेमहामुदभरिकै ३० वायुसखाश्रमरूपसुहावन। धर्म

राजअघपुंजनशावन ॥ दिनमणिसुतसोहतसुखराशी । सिंहासनमधितेजप्रकाशी ३१ धर्मराजकहँइहिविधिदेखी । मुनिसुतकियोप्रणामविशेखी ॥ तेजवंतरविसुतमुनिजाता । उभयपरस्परलखिहरषाता ३२ ॥ दोहा ॥ पुण्यपयोनिधिमिहिरसुत उठेनिजासनत्यागि ॥ सिंहासन मुनिसुवनकहँबैठायोसुखपागि ३३ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशंकेतो
पाख्यानेजियालालद्विजकृतेभाषायांनाशकेत
यमदर्शनोनामपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

चौपाई ॥ पूषणसुवनदियोनिजआसन । मुनिसमेत बैठेसिंहासन ॥ जनमेजयसुनुकथारसाला । जाकेसुनेकटैभ्रमजाला १ नाशकेतसमतरणिप्रकासा । पुण्यसमाजसकलसुखवासा ॥ नाशकेतद्वीरजकरजोरी । अस्तुतिकृतसुतअरुणनिहोरी २ ॥ छन्दचौपैया ॥ रवितेजवदारंप्रभुजगपारंजनपालकखलघाली । तुमनाथअनाथंकृतंसनाथंपालकजलजनशाली ॥ अघओघविनाशनमणिमयआसननाशनमदमुददाई । मणिकंचनशीशामुकुटधरीशाश्रुतिकुण्डलछविछाई ३ त्रैतापविमोचन पंकजलोचनवनजपादसुखकारी । शरणागतनाथारक्षअनाथाभववारिधिभयहारी ॥ नरपामरजोईपापबिलोईदुखदारुणतिनपाये । नवनीतिहिगायनपुण्यपरायन तिनहितबहुसुखगाये ४ अतिरूपवदाराउदधिअपारा धर्मधुरन्धरआपू । मुदमंगलधारीआनँदभारीवर्णतवेद प्रतापू ॥ तवरूपशुभाऽशुभधर्मअधर्महुकरतविचारिसुकामा। तवआयसुपाईलिखतवनाईचित्रगुप्तजिननामा ५॥

तवशासनआहीलोकत्रिमाहींधर्मविभूषितजोई । पाव
तसुखभारीपातकधारीदुखपावतबहुसोई ॥ सुरगणगंध
र्वाशिवअजसर्वाकिन्नरमुनिअमरेशा । तवआसपदका
हींसकलसदाहींआवतसुवनदिनेशा ६ बहुत्रिविधबया
रीआनँदकारीहेजगनाशकस्वामी । निरमलमतिवारेस
बगुणभारेकरौंनमामिनमामी ॥ अस्तुतिसुखदाईमुनि
सुतगाईपढ़ैजोनमनलाई । अघओघनशाईभक्तिबसा
ईअवशिरामपुरजाई ७ ॥ दोहा ॥ उष्णअंशुसुतविनय
सुनिबोलेआनँदपाइ ॥ कौनहेतुआगमनमुनि मोहिंकहौ
समुझाइ ८ धर्मवचनसुनिमुनिसुवन कहसुनियेअवि
नाशि ॥ विरुजअनादीसकलघटव्यापकपूरणराशि ९ ॥
चौपाई ॥ दीन्होंपिताशापममनाथा । अबविलापकृतधु
निधुनिमाथा ॥ सकलकथापुनिकहीबुझाई । जिहिवि
धिशापदियोमुनिराई १० सुनिपितुहेतुधर्मसुखमाना ।
बारबारमुनिकहँउरआना ॥ आशिरवाददियोहरषाई ।
अजरअमरसुतहोउसदाई ११ कामक्रोधमदलोभनपी
रा।सदाविरुजमुनितोरशरीरा॥निगमागमपुराणगंभीरा।
बिनुप्रयासजानौमतिधीरा १२मोहजनितसंशयदुखजेते।
मुनितवतननहिंव्यापहिंतेते॥किन्नरअसुरदेवनरजोई।ना
वहिंशीशसकलमुनिसोई १३ अबमुनिजाहुपिताकेपासा।
मोहजनितसंशयतवनासा ॥ धर्मराजकेवचनसुहाये । सु
निमुनिबोलेआनँदपाये १४ सबविधिभागसुफलनिजजा
नी । भानुसूनुसनबोलेबानी ॥ सुनहुनाथतवदरशनपाई ।
भयउँसुखीसबभाँतिबनाई १५ नाथपुरीतवदेखाचहऊँ ।
स्वर्गनर्कलखिमनसुखलहऊँ ॥ जौनभुवनजहँवाँजिहिठा

ई। धर्मराजसबदेहुदिखाई १६॥ दोहा ॥चित्रगुप्तदेखावहीं कर्मशुभाशुभकाहिं ॥ सकलदिखावहुतातरविजौनजहां जहँआहिं १७दासबोलिनिजधर्मतबकह्योंकिमुनिलैसंग॥ सकलदिखावोसुखसहित दुखनहिंव्यापैअंग १८ सुवन त्रिषांपतिवचनसुनि अनुगनआनँदपाइ ॥ चित्रगुप्तके भुवनकहँ मुनिकहँचलेलवाइ १९ ॥ चौपाई ॥ दूतनचित्रगुप्तसनजाई । कह्योमिलनआवतमुनिराई ॥ चित्रगुप्त उठिभेंटतभयऊ। नाशकेतअस्तुतिबहुकयऊ २० चित्रगुप्तमुनिआनँदपाये । सकलधामनिजमुनिहिदिखाये ॥ चित्रशालमणिरचितअटारी । सकलदिखायोलक्षणमहभारी २१ धर्मराजपुरमुनिसबदेखा । शुभअशुभहुपुनिकर्मविशेखा ॥ आयेचित्रभानुसुतपाहीं । कहयममुनिदेखो पुरकाहीं २२ कहमुनिचरणप्रसादतुम्हारे । देखिपुरी दुखमिटेहमारे ॥ कहोजानहितधर्मभुवारा । शीशनवाइचलेतिहिबारा २३ शापदीनउद्दालकजबते । चन्द्रावतीविकलअतितबते ॥ पतिआज्ञाबहुविधितेकरई । पुत्रशोकदुखदारुणहरई २४ नाशकेततिहिअवसरआये । मातुपिताकहँशीशनवाये ॥ उद्दालकउठिपुत्रहिभेटे । दैअशीषदारुणदुखमेटे २५ आजुसुफलममउद्भवभयऊ । जपतपनेमबहुतदिनकयऊ ॥ सुफलसकलममपूजाआजू। तवमुखदेखिपुत्रसुखसाजू २६ कहउद्दालकबहुरिबखानी। महाअधममैंपातकखानी ॥ मोहिंसमानअधमजगमाहीं। देखासुनाकतहुँकोउनाहीं २७ हे सुतपुण्यप्रभाव हमारे।आयहुसपदितातसुखकारे॥धर्मराजकरपुण्यप्रभाऊ। तातवरणिकह्वियेसातिभाऊ २८ नाशकेतकहपितहिसु

नाई। गयउँधर्मपुरतवप्रभुताई ॥ अस्तुतिकीन्हौंविविधप्र
कारा। मिटेमहाभ्रमशोकअपारा २९ धर्मराजबहुआशि
षदीन्हा। अजरअमरमोकहँकरिदीन्हा ॥ धर्मपुरीपुनिदे
खनलीन्हा। बहुरिप्रणामधर्मकहँकीन्हा ३० ॥ सोरठा ॥
दियआज्ञाभंगजात जाहुतातपितुपासअब ॥ वन्दिचरण
जलजात निरखेतवसारसचरण ३१ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतोपाख्याने
जियालालद्विजकृतेभाषायांपितापुत्रमिलापवर्णनो
नामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

दोहा ॥ जनमेजयकीप्रीतिअति वैशम्पायनदेखि ॥
वर्णनलागेमुदितमन सुन्दरकथाविशेखि १ ॥ चौपाई ॥
स्वर्गलोकतेमुनिसुतआयो। देखनहेतुसकलमुनिधायो ॥
एकपादतापसबहुआये । महाऋषीतनतेजसुहाये २
मांसोपासकबहुमुनिआये । महापुण्यउरहरिहिवसाये ॥
बारिबासकृतबहुमुनिआये । ज्ञाननिधानअमितसुखछा
ये ३ पंचागिनितापसबहुतेरे । आयेगृहउद्दालककेरे ॥
आयेऊर्ध्वपादबहुतापक। जेहरिनामप्रेमयुतजापक ४ ॥
दोहा ॥ अधोमुखीज्ञानीमुनी रवितनचितवहिंजोइ ॥
प्राणायामीवायुभख मुनिगृहआयेसोइ ५ कमलवारि
आहारिजे निराहारिमुनिधीर ॥ अग्निहोत्रकारकसक
ल आयेपर्णकुटीर ६ तीर्थाटनमुनिकरतजे कन्दफलहु
जेखाइ ॥ श्रुतिपुराणवरहरिचरण रतआयेसुखपाइ ७
हरिहरअजपूजकसकल परमारथिमुनिजेउ ॥ परनारीम
नवचकरम लखेंनआयेतेउ ८ कामक्रोधमदलोभजित
जेमुनिपरउपकारि ॥ मुनिलीन्हेंनिजसंगबहु आयेप्रभु

उरधारि ६ सतबादीभूसायनहु पुरतजिबाहरबासि ॥ कारकसंयमकर्महू आयेमंगलराशि १० ॥ सोरठा ॥ जे तापसजगमाहिं गनिनजाहिंआयेजिते ॥ उद्दालकसब काहिंदीन्होआशनअसनशुचि ११ ॥ छन्दहरिगीतिका ॥ नाशकेतसुशीशनाइअशीशसबसोंपाइ । देखिमुनिसुत पाइआनँदकहतमुनियशगाइ ॥ नाशकेतधुरीणधर्मसु धन्यमुनिसुतपात्र । बातसुनिइमिमुनिनमुखकीमुनिश्र नन्दबढ़ाव १२ ॥ दोहा ॥ उद्दालकशिरनाइकह हे मुनि दीनदयाल ॥ जाकहँतुमअपनाइये तिहिआनँदसबका ल १३ ॥ चौपाई ॥ नाशकेतसनसबऋषिबोले । बहुत सराहिअमियवचखोले ॥ नाशकेतहरिपदरतज्ञानी । मासभेदकछुकहौबखानी १४ सबमुनिकरहिंमासउपवा सा । कीजैद्वादशमासप्रकासा ॥ कहौस्वर्गगतिसकल बुझाई । इहिविधिकहेसकलमुनिराई १५ नाशकेतसु निमुनिमुखबानी । सुनहुनृपतिइमिकहाबखानी ॥ मास भेदसुनियेमुनिराई । धर्मशास्त्रनिगमागमगाई १६ घट यणमेषसूरजबआगत । जपतपयोगनेमव्रतजागत ॥ पावनऊर्जमाससबमासन । विश्वदेवतिथितेजप्रकाश न १७ एकादशीशुक्लइषुजानौ । बाहुलव्रततबतेउरआ नो ॥ प्रतिदिननेमकरैइहिभांती । सुमिरैमनवचखरआ राती १८ ॥ छन्द वंशस्था ॥ विभावरीतूर्यघरीविलोकिये । उत्थियसैनीकधरीव्रतंहिये ॥ तमस्वनीचच्छुघटीसुशे षिता । गतापुमान्भूमिबहिर्विशेषिता १९ दिवाकरा प्रातददातिवामके । निशीथनीदक्षिणभागभानगे ॥ दु कूलमूर्द्धामधिन्द्रियधारिये । सदायहीभांतिक्रियासुका

रिये २० ॥ दोहा ॥ मृतिकामंजियपंचदश बारउभयप
दकाहिं ॥ सप्तवारमंजनगुदा एकलिंगकेमाहिं २१ ती
निवारद्वौकरनमें कार्त्तिकव्रतउरराखि ॥ तासुअर्द्धत्रीक
रैताआधेवणिभाखि २२ शूद्रतासुआधेकरैमृतिकापाव
नवारि ॥ कार्त्तिकनेमरुकर्मशुचिइहिविधिकरैविचारि २३
परिवानवमींदिगतिथी षष्ठीरविशशिपर्व ॥ दन्तधावन न
कीजिये येतिथित्यागियसर्व २४ कंटसुगंधीभूरुहन तजि
औदुम्बरअर्क ॥ अपामार्गसहकारगहिजबलगिउदय
न अर्क २५ इहिविधिनितशुचिनेमकरि धरिउरमेंहरि
ध्यान ॥ गन्धपुष्परोचनतुलसि फलपूँगीफलपान २६
अक्षतअर्घहुदेसुरन षोड़शसाजसजाइ ॥ नृत्यैमुदमंग
लसहित तालमृदंगबजाइ २७ पृथकपृथकसुरपूजिये सु
नियेवेदपुरान ॥ विष्णुभक्तिमानसबिषे करियअहर्निश
ध्यान २८ ॥ चौपाई कार्त्तिकव्रतकरियइहिभांती । क
रिअस्नाननेमदिनराती ॥ विनतीकरियसुरनसनएहा ।
देहुनाथहरिचरणसनेहा २९ इहिविधिकरियप्रणामबहो
री । मन्त्रआदिपढ़ियुगकरजोरी ॥ सरिसंगमकाशिका
प्रयागा । मज्जित्रिगुणफलपावसुभागा ३० अन्यस्नान
द्विगुणफलपाइय । सुनहुमुनीशअपरकछुगाइय ॥ अक्ष
ततिलअरुदर्भसमेता । करसंकल्पप्रथमअतिहेता ३१ ह
रिपुरवद्रीतप्प्यप्रयागा । तीनिपरमपददाबड़भागा ॥ इ
नकोप्रथमहिंसुमिरणकीजै । औरेतीरथसोअघछीजै ३२
दामोदरसुमिरणमनदेई । तीनौपुरमेंसोयशलेई ॥ जा
उरबसहिंविष्णुगुणखानी । होहिंजन्मबहुपातकहानी ३३
अञ्जलिशिवरविकहकरिमज्जन । देइअर्घकरिअस्तुति

सज्जन॥ नाभिमन्त्रजलमध्यहिकीजै । उरइहिभांतिह
रिहिधरिलीजै ३४॥ दोहा ॥ नवमीदशमीसप्तमी द्विति
यत्रयोदशिजानि ॥ करियनसेवनधातृफल मुनिसुतक
हावखानि ३५ स्नानमन्त्रतियशूद्रकहँ चाहियनाहिंमु
नीश ॥ हरिहरअजसुमिरणकिये जाहिंसकलअघखीश
३६ कार्त्तिकव्रतकेपूर्णहित हरिसुमिरणभवपोत॥ गङ्ग
आदिसबतीर्थके सुमिरणकियेउदोत ३७ ॥ चौपाई ॥
सुरपितृनहिततर्पणकरहीं । पुष्पदर्भतिलदैमुदभरहीं ॥
देइँअर्घधरिहरिउरमाहीं । पुण्यप्रकाशतदहअघकाहीं ॥
३८ पापहरणमुदमङ्गलदाई । बुद्धिविवर्द्धनतुलसिसुहा
ई॥ कार्त्तिकव्रतीजोसेवतकोई।तापरहरिप्रसन्नअतिहोई॥
३९ सेवनविप्रतुलसिमुददाई।कार्त्तिकव्रतीसुकरैसदाई ॥
पापहरणितुलसीहरिप्यारी । वेदपुराणनकथापसारी ४०
तुलसीविप्रहिपूजनकरहीं । हरहिंपापउरआनँदभरहीं ॥
अर्थदानअरुयोगप्रकाशी । सन्ततसुनहिंकथासुखरा
शी ४१ दीपदाननितहरियशगावहिं। परअपवादनस
पन्यहुलावहिं ॥ परशय्यापरअन्नहित्यागी । ब्रह्मचर्य्य
विज्ञानविरागी ४२ गुरुबालकमधिवृद्धहुजेते । कार्त्ति
कव्रतनिन्दहिंनाहिंतेते ॥ शालितैलतिललवणहुमाखा ।
इनतजिताम्रपात्रनहिंभाखा ४३ भूमिशयनकार्त्तिकव्रत
कीजै । रामहिंसुमिरिसकलअघछीजै ॥ नरकचतुर्दशि
तिलसोंमज्जन । कीजियअपरदिवसनहिंसज्जन ४४
भोजनकांस्यपात्रमहँकीजै । वेदपुराणहृदयधरिलीजै ॥
त्यागियजौनवस्तुव्रतमाहीं । सोसोदीजियद्विजवरकाहीं ॥
४५ माघव्रतपाऊर्ज्जहूजानौ । येहीभांतिबरतउरआनौ ॥

रजनीमाहिंजागरणकीजै । नेमधर्महरिउरधरिलीजै ४६
ताहिदेखियमकिंकरभाजैं । सिंहहिदेखिकरीजिमिलाजैं ॥
अश्वमेधकृतपुण्यजोहोई । सोलहिलहैपरमपदसोई ४७
मनवचकर्मपापतनभाजैं । जियालालप्रभुजाउररजैं ॥
कार्त्तिकव्रतकरपुण्यप्रभावा । भाग्विनपारचतुर्मुखपावा
४८ पुत्रपौत्रधनसम्पतिदाई । विधियुतजोव्रतकरतस
दाई ॥ सकलमुनीशसुनहुमनलाई । उद्यापनविधिक
हौंवुझाई ४९ कार्त्तिकशुक्लचतुर्दशिआवै । उद्यापनवि
धितबहिंबनावै ॥ तुलसीवृन्दसुभगजहँराजै । ध्वजप
ताकतोरणतहँसाजै ५० चारिद्वारमण्डपमहँकीजै । पु-
टसयद्वारपालतहँदीजै ॥ नन्दसुनन्दविजयजयनामा ।
पूरणकरतजननमनकामा ५१ सर्वतुभद्रातुलसीमूला ।
थापियहरणसकलभवशूला ॥ पीतवसनसोंवेष्टितकल
शहि । सर्वतुभद्रातापरविलसहि ५२ सर्वतुभद्रकलश
केपासा । इन्द्रादिकथापियसहुलासा ॥ सुवरणप्रतिमार
चियबनाई । सकलदेवतनकीमुनिराई ५३ जिहिआस्प
दमहँथापनकीजै । पूजनविविधभांतिमनदीजै ॥ षोडश
भांतिपूजिमुदभरई । गीतवाद्यजागरणहुकरई ५४ ज्ञा
नविरागधारिगुणगाइय । निशिवासरहरिपदमनलाइ
य ॥ सहसनधेनुदानफलपावै । रामभक्तिउरहरियरागा
वै ५५ भूसुरतहांनिमन्त्रणकरिकै । पूजनकरैहृदयमुद
भरिकै ॥ यथाशक्तिभोजनकरवावै । देदक्षिणासुशीश
नवावै ५६ तासुपुण्यकोवरणिसुनावै । कोटिनतीरथको
फलपावै ॥ पुनिदेवनकरपूजनकीजै । कपिलाधेनुविप्र
कहँदीजै ५७ गुरुपरिवारहिभोजनदीजै । पत्नीसहदण्ड

वतकरीजै ॥ सबसोंविनयकरैकरजोरी । जासोंजन्मन होइबहोरी ५८ तदुपरिबहुरि विसर्जनकीजै । रामप्रेम निजउरधरिलीजै ॥ तिहिपीछेनिजभोजनकारी । होइ परमपदकोअधिकारी ५९ सर्वतीर्थव्रतदानहुजोई । ता सुकोटिगुणफललहसोई ॥ कार्त्तिकबरतकियेमुनिधीरा । अमितजन्मअघनाशहिंपीरा ६० इहिविधिकार्त्तिकव्र-तकीगाथा । कहुदृष्टान्तसुनहुमुनिनाथा ॥ वैशम्पायन नृपसोंकहई । इकगंधर्वशापवशरहई ६१ वारणतनअ तिउच्चविशाला । गण्डकितटआयोइककाला ॥ कार्त्तिक बरतधरेउरमाहीं । सुमिरतहृदयविष्णुपदकाहीं ६२ का र्त्तिकहेतगयोगजभारी । मज्जतग्राहगहोदुखकारी ॥ हा हाकारकियोगजभारी । मनगतिहरिआयेतिहिबारी ६३ काटोशीशसुदर्शनलैकै । दिव्यस्वरूपधरोहरिज्वैकै ॥ शंखचक्रगदपद्महुधारो । चढ़िविमानवैकुण्ठसिधारो ६४ कार्त्तिकव्रतहरिनिजकरमारा । ऋषिनवचनवैकुण्ठसि धारा ॥ इकऋषिकार्त्तिकव्रतमनलावा । धर्मदत्तअसना मकहावा ६५ महापवित्रभक्तहरिकेरा । निगमागमवर्ण तसबबेरा ॥ स्नानहेतसोसरितटगयऊ । भूरुहएकतहां शुचिरह्यऊ ६६ शाखाविटपप्रेतबहुवासा । क्षुधापिया ससहैंअतित्रासा ॥ प्रेतसहसतिहिक्षणकहुँगयऊ । एकप्रे तगोरुहपररह्यऊ ६७ प्राणायाममुनीश्वरकयऊ । क्षिति रुहऊपरघनरसठयऊ ॥ वनसंसर्गदिव्यवपुधारा । चढ़ि विमानवैकुण्ठसिधारा ६८ अब्दसहस्रप्रेततनुबीता । मुनिदर्शनलहिपातकजीता ॥ सकलप्रेतआयेतिहिबारी। परसिप्रेततनभयेसुखारी ६९ दर्भतुलसिसंसर्गहिपाये।

महापापजड़स्वर्गसिधाये ॥ कार्त्तिकव्रतमाहात्म्यअपा
रा । किहिविधिवरणिकरौंविस्तारा ७० ॥ छन्दतोटक ॥
मुनिनाथसुनौकलुऔरकहैं । द्विजएकधनेशसुनामरहैं ॥
धनमत्तमहाअविवेकभरा । तजिकर्मनिजै बणिधर्मधरा
७१ क्रयविक्रयहेतुगयोतहँवाँ । सरिनर्मदकूलरहैजहँ
वाँ ॥ व्रतिकार्त्तिकगोधगयेवहुतै । कहसंयमनेमकथासु
कृतै ७२ ॥ दोहा ॥ विकृतलवणादिकरसन नामधनेश्वर
जोइ ॥ दरशप्रतापसुअन्तवै गोवैकुण्ठहिसोइ ७३ च
ढ़िविमानवपुदिव्यधरि पाईमुक्तिनिदान ॥ इहिप्रकार
धनपतितरो करिदर्शनसुनिगान ७४ ॥ चौपई ॥ का
र्त्तिकव्रतीएकद्विजनारी । महाक्षीणतनुनिपटदुखारी ॥
मज्जनहेतधसीसरिजबहीं । व्याकुलभयोतासुतनतबहीं
७५ व्यापीशीतलतासुशरीरा । हाहाहरिकहिपतितअ
धीरा ॥ जलमोंगिरतदिव्यतनुधारी । चढ़िविमानवैकु
ण्ठसिधारी ७६ कार्त्तिकव्रतकरिसुनहुमुनीशा । तरेअमि
तजड़क्रूरअघीशा ॥ दर्भतुखासितिलतर्पणकीन्हे । तिहुँपु
रसुखअपवर्गहुलीन्हे ७७ जासुधामतुलसीवटहोई । तीर
थसमगृहजानियसोई ॥ सेवनतुलसिपरमसुखकारी ।
महापुण्यअघतमतिमिरारी ७८ तुलसीपादपजाघरदे
खै । यमकिंकरभयतहांनलेखै ॥ परसनपालनसेवनकर
ई । मनक्रमवचनपापलखिजरई ७९ हरिहरअजतहँपू
जनकीजै । पावैमुक्तिसकलअघछीजै ॥ तुलसीशिरधरि
जेतनत्यागहिं । पावहिंमुक्तिसकलअघभागहिं ८० तुल
सीनिकटश्राद्धजेकरहीं । तासुपितृरौरवतजितरहीं ॥
तुलसीचन्दनजोनलगावहिं । सोतनतजिवैकुण्ठसिधा

वहिं ८१ तुलसीपुष्पविवशसवदेवा । तातेअवशिकरि यतिहिसेवा ॥ धात्रीछांहपिण्डजेदेवैं । तिनकेपितरमुक्ति धनलेवैं ८२ ॥ दोहा ॥ धात्रीफलशिरकण्ठमुखधरि विधि समतनतेइ ॥ धात्रिपत्रफलअर्चिसुर जनुसुवरणमणिदेइ ८३ तीरथमुनियोगीसुरनदर्शनवहुफलजोइ ॥ धात्रीपाद पछांहपुनि अशनकियेफलसोइ ८४ तुलसीधात्रीअमित फल कहेकहोनहिंजाइ ॥ जियालालकिहिविधिकहै शार दशेषसकाइ ८५ ॥ चौपाई ॥ नाशकेतमुनिगणनसुनाई । अवकावरणौंकहियवुझाई ॥ तवमुनिसुतपहँमुनिगणबो ले । सुन्दरवचनमनोहरखोले ८६ हरिशिरतुलसीरह तसदाई । सोकांहैंममकहोवुझाई ॥ नाशकेतसुनिमुनि मुखवानी । बोलेअमितहर्षउरआनी ८७ वारिधिसुत जालंधरनामा । अतिवलवानकठिनसंग्रामा ॥ वारिरा शिसोवसततसदाई । जीततफिरैत्रिभवसमुदाई ८८ ए कसमयभार्गवपहँजाई । करिदण्डवतवैठशिरनाई ॥ तिहिअवसरआयोसुरभानू । शीर्षभिन्नलखिविस्मयमा नू ८९ गुरुसनविनयजलन्धरकयऊ । मूर्द्धाभिन्नराहुकि मिभयऊ ॥ एकचक्षुतवकहोवखानी । जालन्धरतुमअ तिभटमानी ९० वन्धुतुम्हारवलीदरभारी । जीतेसकल सुराऽसुरझारी ॥ धर्मकामजगकेसुखजेते । देवासुरसन छीनतेते ९१ संयमनेमआचरणकाहीं । लीन्होछीनिसुरा सुरपाहीं ॥ चारौंवेदछीनिसोलीन्हा । तवव्याकुलसुर हाहाकीन्हा ९२ सपदिगयेवैकुण्ठसिधाई । हरिकीअ स्तुतिबहुविधिगाई ॥ अस्तुतिसुनिकहरमाविहारी । ह तिहौंशंखमत्स्यतनुधारी ९३ इहिविधिकहिंप्रभुतिमि

तनुधारा । शंखासुरकीन्होसंहारा ॥ देवअसुरतहँजुरि कैआये । वनधिमथनहितविनयसुनाये ९४ तवप्रभुकू मैरूपनिजकीन्हा । पृष्ठसुमेरुमथानीलीन्हा ॥ वासुकि अहिकीदामबनाई । मथैंसुरासुरअतिमनलाई ९५ म थितोयधिअतिव्याकुलकरिकै । चौदहरत्नकाढ़िमुदभरि कै ॥ श्रीमणिरम्भाअमीवारुणी । सुरतरुविषहरधनुष कारुणी ९६ शङ्खगजाश्वधेनुधन्वन्तर । सोमसहितवा रिधिकेअन्तर ॥ काढ़ोमथिदेवासुरजवहीं । लीन्होबांटि सकलमिलितवहीं ९७ कौस्तुभमणिलक्ष्मीहरिलीन्हा ॥ उच्चसूरगजइन्द्रहिंदीन्हा ॥ विषशिववारुणिअसुरनद यऊ । अमृतसुरनपियावतभयऊ ९८ गयोराहुतहँरूप छिपाई । धारिचक्रहरिशीशगिराई ॥ तवतेराहुभिन्नहै शीशा । सुनहुजलन्धासुरभटईशा ९९ तातमथनसुनि क्रोधहिधारी । उठोमूढ़वलअन्धरभारी ॥ चलागुरुहि सोशीशनवाई । मानहुकालदेहधरिआई १०० ॥ छन्द चंद्रवर्त्म ॥ तहँकालनेमिइकदनुजआइ । तनुजानिज दीन्हो तासुलाइ ॥ वृन्दाजुनामताकरसुआहि । जालन्ध रकहँदीन्होविवाहि १ सुखिहोतभयोअतिपाइनारि । पु निजातभयोनिजपुरसिधारि ॥ सतिअतिनितानिजपति चरणसेव । मनगुनितिहिंईश्वरसकलदेव २ ॥ छंदगगन ॥ तासुतपाबलजालन्धरखलकरउतपातही । जीतिसुरासु रसकलनागनरकरिकरिघातही ॥ पुनिएकबारहरिपुरप धारलखिसुरभागियो । लखिउदधिसूनुपुरइन्द्रसूनअति सुखपागियो ३ ॥ ॥ छन्दहंसी ॥ लखिपुरसूनसुनिजगृहग यो । तहँसुखभोगकरतवहुभयो ॥ श्रीपतिजीतनकोपुनि

चला । मिलेबाटपतिजापतिजला ४ मारगमाहिंयुद्धअ
तिभयो । युद्धविरुद्धउभयभटठयो ॥ विविधप्रकारयुद्धसो
करीं । तोषितहोतभयेश्रीहरी ५ मांगुमांगुवरजोमनच-
है । बारबारश्रीहरिइमिकहै । तोषितआजुजलन्धरभये ।
तवसमानकोउसमरनकये ६ ॥ छन्दचौपाई ॥ मांगहुवर
जोइच्छाहोई । देहौंआजुसकलमैंसोई ॥ वारिधिसुतबो
ल्योहरषाई । ममपुरबसियसदाजगराई ७ तजिअमृतां
धसपुरसुखखानी । बसहुनिरन्तरशारँगपानी ॥ एवमस्तु
बोलेअसुरारी । डगमगानिभूदिग्गजभारी ८ ॥ दोहा ॥
कूर्मसहितइन्द्रादिसुर व्याकुलभेतिहिकाल । रमासहि
तितादिवसते बसतवारिगोपाल १०९ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतोपाख्याने
कार्त्तिकमाहात्म्येजियालालद्विजकृतेभाषायांजालन्धर
विष्णुवरप्रदानंनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

दोहा ॥ दूतपठायोवनधिसुत राहुनामकैलास । आ
इलखोशिवकहँवहुरि गयोइन्द्रकेपास १ इन्द्रविभवल
खिक्रोधकरि गयोजलधिसुततीर । सुनिजालन्धरक्रोध
करि बोलेभटरणधीर २ ॥ चौपाई ॥ चतुरंगिनीफौजस
जवाई । चढ़ोइन्द्रपहँवाद्यबजाई ॥ तृणसमानशतमन्यु
विचारी । जीतौंनिमिषमाहिंउरधारी ३ यहविचारिउरक्रो
धहिठाना । शुम्भनिशुम्भसंगबलवाना ॥ तिनसमकोटि
नशूरअपारा । अमरावतीजाइपगुधारा ४ देवनहरिसन
जाइपुकारा । सुनासीरसुनिफौजहँकारा ॥ समरभूमिभ
हँदोनोंयोधा । लागेलरनधारिउरक्रोधा ५ ॥ छन्दबरवा ॥
कोटिकोटिगहिआयुधगहिधनुबान । मूशलतोमरपरिघ

हुशूलकृपाना ॥ भिन्दिपालपरिघायुधयुतश्रीखण्ड । मुद्गरपट्टिशशक्तिहुगदारुदण्ड ६ करहिंपरस्परयुद्धावली सुभारि । उभयसक्रोधितलरहींसुभटप्रचारि ॥ देवअमितवलधारेलरहिंअघाइ । गिरहिंअसुरभूमाहींलरिमुरझाइ ७ उशनाकविउपदेशाअसुरबुलाइ । द्रोणाचलगिरिओषधिलावहुजाइ ॥ द्रोणाचलसंजीवनिलायेसोइ । पाइसजीवनियोधाअतिबलहोइ ८ लरहिंमहाभट भारीअतिभयकारि । छूटहिंअसृकधाराजनुपिचकारि ॥ सुनासीरसनबोलेसुरसमुदाइ । संजीवनिजिमिलायेकौणपजाइ ९ सोवारिधिसुतखायोमरिहिनमार । भयेदेव इकठौरीकरहिंविचार ॥ सुरपतिसुरयुतभागेगयेपलाइ । गिरिसुमेरुपरपहुँचे गिरिअरिजाइ १० भागेसुरलखिआसुरअतिहरषान । शंखतूरअरुफीरीबजेनिशान ॥ इन्द्रपुरीइनजीतीउतसुरजाइ । सहसुरपतिकैलासमपहुँचेआइ ११ इन्दुवर्चसमउज्ज्वललखिकैलाश । कनकशृंगमणिविरचितअमितप्रकाश ॥ कल्पवृक्षबहुसोहतयोजनताहँ । कामधेनुऋधिसिद्धीशोभितजाहँ १२ निगमागमपुराणहुभाषतवेद । बसहिंउमापतिधारेभक्तिअभेद ॥ अगणितसुखतहँराजैंकिमिकहिजाइ । जहँऋतुराजबसन्तहुरहेलुभाइ १३ सोकैलासवरणिकैलहकोपार । जहँ जगदम्बमहेश्वरकरतविहार ॥ कामक्रोधजहँनाहींतहँ सुरजाइ । कीनदण्डवतशिवकहँसुखसरसाइ १४ जालंधरसुधिपायोअसुरबुलाइ । कोटिनसेनपआयेशीशनवाइ ॥ कालनेमिअरुशुम्भनिशुम्भाराहु । महामहोदरकोटिनदीरघबाहु १५ जनुकज्जलगिरिआंधीउड़हिं

अपार। पापपयोनिधिआसुरतामसधार॥ तोमरमुद्गर आयुधधारिसुवीर। चापपरशुश्रीखंडकृपाणहुतीर १६ शूलभुशुंडीगदाहुशस्त्रनसाज। झांझफीरिसहनाईबाजे बाज॥ ढोलनिशानबजायेसजेजुझार। पूरतिहूँपुरमाहींअतिरवभार १७ चलोकटकअतिघोराभूअकुलानि। पापभारकिमिसाधैंथकीसयानि। कोटिनन‌भपथधाये कोटिदिशान। कोटिनलोहिणीचालैंबहुविदिशान १८ प्रलयमेघसमगरजहिंसुभटअमान। रथकरिहयचढ़िबाहनउष्ट्रविमान॥ चलोकटकसजिजबहींयुत्थबनाइ। जाइतैंहरिशिवमिलिकहसमुझाइ १९ हेशिवतुमसमकोऊनहींदयाल। दुराधर्षसुखधामाअहोकृपाल॥ सदा मोहिंप्रियहेहरऔघड़दानि। शशिललाटशिरगंगाधर सुखखानि २० केहरित्वककरडमरूधरअसिव्याल। कामारीसोमास्यहुमहाविशाल॥ गरलकंठतिरशूलाजटा विशाल। मुदमंगलकीमूलामहाकराल २१ नन्दीश्वर जिनवाहनअहिकोपीन। बामअंगजगदम्बाशुकादिशि कीन॥ त्र्यक्षीपञ्चास्याहूअहिउपवीत। तारणपालन भावागुणआतीत २२ ॥ दोहा ॥ शरणतुम्हारीदेवसब रक्षाकीजियनाथ। व्याकुलफिरतविहालसुरजीतेसुतप तिपाथ २३ रमाअनुजपुनि वरदियो तासोंमैंनहिंमार। सुरनजीतिअतिदुखदियो वधियनाथइहिवार २४ सुनिहरिवचनसुहर्षिहर कहोनाइपदशीश। देहुचक्रधनु अस्त्रनिज मन्त्रशस्त्रजगदीश २५ ज्वालमालहरिबाण जे हरकहँदैभगवान। बहुप्रकारसमुझाइकै गेनिजलोकसुजान २६ ॥ छन्दप्लवंगम ॥ सुनोतिहीवैरुद्रआवजालं

धरा। बोलायेनिजसुभटअतिहिरिसउरकरा ॥ नागव
क्रूषटतुंडनन्दियुतआइयो । वीरभद्रबहुगणनसहितरि
सआइयो २७ ॥ छंदरागगीतिका ॥ धरेआयुधसकलशि
वपहँआइयोबलवान । चमूचारिससैनपतिकरियुतथवां
टिमहान ॥ आपकालविकाइमृगकोकरनलागेजाप। च
लतभेतबसैनलैकैवीरभद्रसुआप २८ जहँजलन्धरत
हांपहुँचेवजनलागनिशान । ढोलभेरिमृदंगवाजेउभय
दलबलवान ॥ हर्षयुततबलरनलागेविविधआयुधधा
र। शक्तिबाणत्रिशूलछूटतहोतसमरअपार २९ मुशल
तोमरऋष्टिचक्रहुअमितआयुधत्याग । चढ़िविमाननब
रषिनभतेहतहिंबहुहयनाग ॥ अमितसुरकृतमल्लयुद्धहि
मुष्टिदन्तप्रहार । कलाजंगरुकालफांसहिबांधिबारहिबा
र ३० हथकुड़ाइकदस्तिहूडेदस्तिहूसोसाधि। तकतघात
नलादिलादनरूमडूबहुबांधि ॥ मारिदण्डाबांधितकिया
अरुनिवाजहुवन्द । बालसांगड़रूपदस्तहुबांधियुत
आनन्द ३१ कमरतूरमहौतिबांधतरक्कअजिबनाइ । क
मरपेटाजांघफारहुबांधिरुटसरसाइ ॥ कुलीकिल्लीवग
लिटँगड़ीविविधपेंचनधारि । बांधिहपटाअरुसवारीउ
चशब्दपुकारि ३२ डगविंडील्लोकानधोबीपाटहूदुखदा
इ। बांधिकौपक्वामिरोरहिगर्जआनँदपाइ ॥ रैलअरु
झपकीभुलावादेतकोऊधाइ । कोउसकलसमेटबांधिसु
देतभूमिगिराइ ३३ कोउलेतछुड़ाइनिजकोहतिकरेजा
फार। कोउधरिझभ्भकोरिचरखीचालियोदुखकार ॥ आं
खफोरहिचलतकोऊनाकतूरहिबाँधि । देतभूमिगिराइ
कोऊभटअड़ंगासाधि ३४ करहिकरसोंपगहिपगसोंग

हतधाइअचाक । उरहिउरसोंनखनपैंचनवधतबहुविधि ताक ॥ परहिंभूतलदनुजहतिहतिबहतरुधिरशरीर। पाइऔषधलरहिंपुनिउठिमहाजोरसुवीर ३५ देखिजिय तपिशाचबहुविधिदेवअतिभयपाइ । जयतिजोशिवकह तभेइमिअतिहिमनअकुलाइ ॥ तबहिंशिवमनजानिप्र कटोरूपएककराल । कूटतनमुखगुहासमलखिभयेदनु जबिहाल ३६ देखिशिवकोरूपअन्तर्द्धानभेदेंधरि । बर षिनभतेअस्त्रशस्त्रनअमितपाहनमारि ॥ देखिशिवअति क्रोधकरिकैलगेमर्दनवीर । तबहिंआसुरभजनलागेछां ड़िअस्त्रअधीर ३७ भजतलखिकैशुम्भवीरनिशुम्भअ तिबलवान । फिरहुफिरुइमिवचनकहिकैभयोअन्तरधा न॥ बरषितोमरतीरआदिककियोघनसमशोर।रुद्रतनगि रिगुहामुखतिहिघुसैंशरचहुँओर ३८ ब्रह्मतरुसमउभय सेनासोहलोहितरङ्ग । अस्त्रशस्त्रनछिन्नभिन्नसुभयेभ्रा भरअङ्ग ॥ बरषिबाणनभागिगणतबआवगणपतिपासु । बहुरिसमरहिकरनलागेउभयसेनसुआसु ३९ कालनेमी सोलरनहितनन्दिकियतबगोन । चलिगजास्यहुलरन लागेशुम्भपहँबलभौन ॥ षटवदननीशुम्भसनभेलरत आनँदपाइ । उभयदलमहँलरहिंयोधाजयतिशब्दसुना इ ४० तबनिशुम्भसुक्रोधकरिकैकोकिकेशरपांच । हनत भोसोलगतमुर्च्छितगिरोभूमेंसांच ॥ बहुरिनभमेंजाइकैसो करनलागोयुद्ध । तबहिंषटमुखशक्तिलैकरहनोतिहिह्वैक्रु द्ध ४१ भयेनन्दीश्वरसुक्रोधितकालनेमीयत्र। सप्तबाणस न्धानिहतध्वजकेतुसारथितत्र ॥ देखिनिजरथभंगजबहीं असुरह्वैतबक्रुद्ध । नन्दिश्वरकोकाटियोधनुअमितकरिकै

युद्ध ४२ शूलमारोनन्दिसुरकेनन्दिकरगहिताहि। हनतभे
तिहितनहिंमेंइमिकरतरणचितचाहि ॥ शुम्भरथअसवा
रगणपतिमूषवाहनराज । चलेरणसमुहाइयुगभटलरन
हितसुखसाज ४३ असुरशुम्भसुक्रोधकरिकैहनेवीसनरा
च । गणपतिहुअनगणितशायकहतेकुनपपिशाच ॥ ती
निशरहतिगणपतिहिलणवधोसारथितासु । शुम्भतव
हतषष्टिशायकगणपतिहुतनआसु ४४ तीनिइषुहतमू
षकेतनगिरोसोभूमाहिं । अतिहिवेदनभईतातनरहीत
नसुधिनाहिं ॥ तवहिंवारणवदनचढ़िरथअतिहिरिसउ
रधारि । शुम्भउरमेंपरशुमारिसुमुर्छिपुहुमीपारि ४५
वक्रकरिवरमूषचढ़िकैधाइयोतिहिकाल । कालनेमिनि
शुम्भदोऊलरतभेनितिपाल ॥ उभयदिशितेसुभटदो
ऊगणपतिहिअकुलाइ । वीरभद्रसुदेखिगजमुखघिरेआ
तुरआइ ४६ लियेअगणितभूतसंगहियोगिनीवैताल।
भैरवादिककूष्मांडहुप्रेतअमितकराल ॥ लियेमस्तक
मनुजकररणरंगयुद्धविवाद । कोउवरवरकोउकिलिकि
लिकोउकेहरिनाद ४७ करतवाजतडमरुआदिकलगे
भजनसैन । होइखण्डलसमरमण्डलअसुरधीरधरैन ॥
नन्दिसुरषटवदनहूपुनिलरतभेतहँआइ । अमितशिरभु
जछिन्नभिन्नसुगिरतदनुजतवाइ ४८ सुनहुऋषियहक
थासुन्दरथकितदनुजनदेखि । साजिस्यन्दनउदधिन
न्दनचलोहर्षिविशेखि ॥ गर्जिहरिसमभेरिदुन्दुभिवजत
भेतिहिकाल । तरपणवमृदंगगोमुखबाजियोभूपाल ४९
आइयोरणभूमिमेंतिहिसमयपाथधिजात । ऐंचिधनइ
पुतजतभोतिहिभयोशब्दअघात ॥ भूमिनभवह्यविशि

खञ्जायेअमितयोधनमार । पांचबाणगणेशकेषटवदन पांचप्रहार ५० वीरभद्रहितींसशरहतबारबारप्रचारि । शक्तिषटमुखहृदयमारोअमितरणकरिरारि ॥ सँभरिष टमुखगदाकरधरिहनतभेतिहिबार । नन्दिसुरहुगदाह तिकरिविकलभूमेंडार ५१ बाजिकेतूधनूछत्रहुअमित बेधिततीर । जागिमुर्च्छातिहीबेलाउठोदधिसुतवीर ॥ शक्तिमारिगणेशकोरथखण्डिभूमेंडार । तबहिंगणपति द्वितियरथपरभयेतुरितसवार ५२ ॥ छन्दबाला ॥ कीन अतिक्रोधतबवीरभद्रा । तेजनिजधारिचललड़नक्षुद्रा ॥ उदधिसुतपाहिंकियसमरघोरा । तासुरथकाहिंतिनतुर ततोरा ५३ क्रोधकरिउदधिसुतवीरभद्रहि । दीनहति डारितबभूमिक्षुद्रहि ॥ हनोतबवीरभद्रहुप्रचारी । सुवन दधिहनोउठिपरिघभारी ५४ ॥ छन्दरामगीतिका ॥ वारिजा सनदियोताकोहनोसोअतिजोर । गिरेलागतवीरभद्रास मरकरिअतिघोर ॥ वमनलागोरुधिरमुखसोंभयेनिपटि बिहाल । भागिगणसबगयेतबहींजहँगिरीशदयाल ५५ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतोपाख्याने जियालालद्विजकृतेभाषायांशिवजालन्धरसैन्यसमर वर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ८ ॥

दोहा ॥ देखिगणनकहँविकलअति शंकरसंशयरा खि ॥ पूछतभेतिनसोंसकलकहोयथारथभाखि १ ॥ छन्द रामगीतिका ॥ चलेसुनिकरिक्रोधशंकरचलतादिग्गजशे ष । कमठभूमिवराहदिकपातिभयेकँपतविशेष ॥ लीन कोपिपिनाकशिवजबदेवहर्षिमहान । डमरुतूरमृदंगफी रीबजनलागनिशान २ ॥ छन्दरोला ॥ त्र्यम्बकचन्द्रल

लाटपंचमुखरूपविशाला । सोहनागउपवीतहृदयमुण्ड
नकीमाला ॥ लीन्हेचक्रत्रिशूलजासुहैआदिनअन्ता ।
नन्दीपरअसवाररूपअतिविकटअनन्ता ३ छायेअमि
तविमानव्यिमतमधिदेवसमाजा । किन्नरचारणयक्षगंध
र्वकरिकरिसाजा ॥ अजआदिकसुरआइलखैंतहँयुद्धक
राला । जैतिजैतिजयकारसमररहिपूरिविशाला ४ ॥
छन्दरामगीतिका ॥ नीलचक्रकरालशिवतबमहारिसउरछा
इ ॥ देखिशिवकहँक्रोधयुतगणगर्जसममृगराइ ॥ लीन्ह
शिवतबक्रोधकरिकैखैंचिधनुषकराल । लगेबर्षणबाण
अगणितकियेअसुरबिहाल ५ करतजोत्रैलोकक्षणमें
भृकुटिकोरसुछार । लरततिनसोंअसुरनानाअस्त्रशस्त्र
नधार ॥ उदधिसुतकरिक्रोधधायोशरशरासनधारि ।
तासुसंगनिशुम्भशुम्भहुचलेलरनप्रचारि ६ लगेबर्ष
नघोरशायककहोंकिहिविधिजाइ । मनहुँगर्जतप्रलयउ
दकदहोतुशब्दमहाइ ॥ एकएकनभिरहिंबहुविधिकरहिं
समरअपार । तजतशायकअयुतअगणितमहातीक्षण
धार ७ बरषिबाणनसोंजलन्धरकीनरजनिमहान । दे
खिध्वान्तगिरीशनिजगणदेखिविकलनिदान ॥ तानिध
नुनिजत्यागिशायककोटिमायाआसु । दशौंदिशिनिजबा
णछायेकीनव्याकुलतासु ८ गिरनलागेअसुरकटिकटिरु
ण्डमुण्डअपार । मारुधरुधरुखाहुकाटहुकरतइविधिपु
कार ॥ देखिइहिविधिघसमआसुरशक्तिशिवउरखण्ड । मा
रिशरहरशक्तिकेबिचकीनताकोखण्ड ९ बाणमारोबहुरित्रि
षकेत्यागिशरहरकाट । बाणशिवनिजव्यालवतहतिताहि
बहुविधिडाट ॥ उदधिनन्दनचढ़िसुस्यन्दनबहुरिहरढि

गश्राव । अतिहिक्रोधितवचनबहुविधिकटुकहरहिसुना
व १० सप्तबाणसुखण्डहरपरखण्डकियहरश्रासु । खण्डि
अगणितवाणशिवनिजखण्डकियरथतासु ॥ केतुधनुह
यध्वजाछत्रहुकाटियोतिहिकाल । गदाइकहनिहृदयता
केकियोनिपटबिहाल ११ हर्षिहरअवसमरमधिमेंफिर
तआनँदपाइ । कोटिकोटिपिशाचबधिनिजधामदेतपठा
इ ॥ करसुदर्शनगदाधनुषहुधरेसोहमहेश । अमितछ
विअँगअंगराजतकहिनपावतशेश १२ चेतिमुर्च्छासो
जलन्धररुद्रबलकोदेखि । प्रकटमायाअमितकीन्होसम
रभूमिविशेखि ॥ मेनकादिकप्रकटिअप्सरगणनकोति
हिकाल । लगींगावनकामरागनबजेबाजाताल १३ क
रहिंगानअलापसुनिरवमोहतिहुँपुरहोत । किंकिणीकंक
णहुनूपुरशब्दमोहउदोत ॥ मनहुँरतिबपुधारिकोटिनकर
तइहिंविधिनाच । उड़तगन्धसुगन्धबहुविधिमोहिगेसु
रसांच १४ शिथिलभेसबसुभटजेतेसमरभूमिमहान ।
देखिइमिअसुरेशमायामोहशिवसुखदान ॥ पतितधनु
शरभूतधात्रीभेशिथिलशिवक्षुद्र । पुनिजलन्धरकीनमा
याकामवशभेरुद्र १५ कामवशह्वैरुद्रतबहींगेउमाकेपा
स । कँपेपुरलखिरुद्रमायाअसुरवशकृतहास ॥ करिकप
टअसुरेशशंखमृदङ्गआदिवजाइ । उहांशिवकहँदेखिगि
रिजागईसखिनलजाइ १६ घूमिशिवपुनिसमरआयेल
रतउचितनकाम । उतहिंगिरिजाभजनलागीविष्णुके
गुणग्राम ॥ धारिनिजउरक्रोधकोकररामरामपुकार । म
जनकरतैआइकैप्रभुप्रकटभेतिहिवार १७ देखिहरिको
जगतअम्बाकहोवत्सलसनेह । करहिहरसनयुद्धहेप्रभु

असुरपापीयेह ॥ करहुआजुसुयतनस्वामीमरहियहजिहिभांति । तबहिंगिरिजहिधीरदैकैकहोअसुरअराति १८ सुनहुमातातीययाकीकरतपतिव्रतधर्म । त्यरतहूरसनविविधभांतिनतासुहीकेकर्म ॥ कथाइहिविधिभाषिकैहरिगयेताकेगेह । उदधिसुतकोरूपधरिकैकियोअधिकसनेह १९ छलतभेतियउदधिसुतकीधारिहरिरितिहिरूप । जेअनन्तअनादिनिर्गुणअलखआदिअनूप ॥ हरिपतिव्रतहरोजबहींमृत्युतिहिढिगआव । लखोवृन्दास्वपनअद्भुतमहाघोरभयाव २० लखोनिजपतिचढ़ोमाहिषतैललेपेअंग । याम्यदिशिकोजातदेखोमुण्डतनमेंभंग ॥ दिशाअम्बरक्षीणगात्रहुसंगयमकेदूत । देखिइहिविधिस्वपनअशकुनभयोशोचअकूत २१ ॥ दोहा ॥ तापसमुनिइकबसततहँ जातभईसुखहीन ॥ बहुप्रकाररोदतिवदतिवचनकहेअतिदीन २२ करिविनतीपुनिकहतिभेसुनहुमुनीशदयाल ॥ ममभर्त्ताअरुरुद्रसन होतसमरविकराल २३ हारिजीतकिहिहोइहै मुनिवरकहोबुझाइ ॥ डारोतिहिक्षणएकहरिभुजशिरदधिसुतलाइ २४ छन्दसुन्दर ॥ भुजशीशहिडारिदियोमहिमेंकपिहालकहोतिहितीरपुकारी । दधिसूनुशिवैअतियुद्धभयोरणमाहिंहनोतिहिआजुपुरारी ॥ यहभाषिसुअन्तरधानभयोहरकेगुणगाइसुनावतसोई । लखिशीशपियानिजकोभइमुच्छितबालपरीधरणीबिचरोई २५ कररोदनघोरविलापमहाकिहिभाँतिबखानिकहैकबिकोई । प्रभुलीनसुरासुरजीतिसबैमरिआजुपरेधरणीबिचसोई ॥ तिहुँलोकहिजीतिकियोवशमें पतिआजुअनाथपरेमहिमाहीं ।

नरकिन्नरगन्धर्वजीतिलिये समुहेपगुआइयकोउसुनाहीं २६ वधितापसहाथपरेमाहिमेंकिहिभाँतिकहौंविधिऔ गुणगाई । तियरोयकहैमुनिसोंपतिजीवनहेतकहौमुनि नाथबुझाई ॥ मुनिनाथकहैसुनुतीयसुशीलजियैनहिंतो रपतीहरमारा । सुनिकैइमिरोदनकीनमहाकरिरोषसुदो षदियोकरतारा २७ ॥ दोहा ॥ जिहिविधिहरिवधवायऊ सोमुनिकहावखानि ॥ सुनिवृन्दाकहधिकहरीमहाअघौ गुणखानि २८ हेहरितुमत्रिभुवनअधम परतियरतअघ मूल ॥ देहौंतुमकहँशापअव कियोहृदयममशूल २९ म मपतितुमवधवायऊ दियोमोहिंदुखभारि ॥ प्रकटशाप यहलीजिये हरिहिअसुरतवनारि ३० कहहरिकरिहौं अचलतवशापसुनौसुकुमारि ॥ द्वितियशापपुनिदेतिभै वृन्दाउररुटधारि ३१ ॥ चौपाई ॥ प्रभुतवतियहरिहैंनि शिचरजव । तुवसहायकरिहैंमर्कटतव ॥ वृन्दाइहिविधि शापहिदीन्हा । योगानलपुनिप्रकटितकीन्हा ३२ कह तभयेहरिवृन्दापाहीं । मांगहुवरहमसोंजोचाही ॥ तो षितभयउँपतिव्रतदेखी । भङ्गकीनसुरहेतविशेखी ३३ माँगहुवरजोइच्छाहोई । भयउँप्रसन्नपतिव्रतजोई ॥ वृ न्दाकहतभईइहिभांती । जोप्रसन्नहौदैत्याराती ३४ तौ मोकहँप्रभुयहवरदेहू । वसहुँशीशजबलगिजगयेहू ॥ एवमस्तुश्रीनाथपुकारा । सुनिइमियोगानलतनजारा ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ रामकृपाहरिपुरगईआगेसुनहुमहीश ॥ सोमायाकपिआयऊ लायोदधिसुतशीश ३६ ॥ छन्द रामगीतिका ॥ उहांपाथधिसुवनरणकृतमहाछलबलका रि । गईगिरिजाकहनशिवसोकथानिशिचरनारि ॥ ति

हीक्षणमेंकीनमायाजलधिसुतहरषाइ । हरिउमाबैठावर थमेंअसितशरबरषाइ ३७ करतरोदनजगतअम्बादेखि शिवतमधारि । छोड़िबाणनिशुम्भशुम्भहिहनतभयेप्र चारि॥ काटिरथहरतवहिंताकोलीनगिरिजहिछीनि। ता सुतनमेंक्रोधकरिकैहनेहरशरतीनि ३८ भेदिशरहरउद रताकेधरोरूपकराल । भीमरूपसुधरोशङ्करज्ञ्वालमाल विशाल ॥ देखिशंकरवपुभयंकरभजेनिशिचरवीर। कुश धिसुतपाखण्डकीन्होप्रगटिमायाधीर ३९ गिरतनभसो हाड़कचभेप्रगटजन्तुप्रचण्ड । मारुधरुधरुशब्दबोल हिंगिरितपरशुअखण्ड॥ मुण्डबिनवहुरुण्डधावहिंचलेह रगणभागि। तहांवर्षनबालुलागीबरतदेखहिंआगि ४० भूतप्रेतपिशाचनृत्यहिंयोगिनीबहुनाच । वर्षिअगणि तआयुधनकहँकियोनिशिसमसांच ॥ रचेनन्दीगणबब हुविधिरुद्रतिनमधिसोह । अमितकरिइहिभाँतिमाया कपटकरिकरिमोह ४१ देखिइहिविधिकपटशङ्करवपुभ यंकरधारि । धारिनिजकोदण्डकोपितहरीमायासारि ॥ बहुरिकाटोशीशताकोक्रोधकरित्रिपुरारि । तबकबन्धसु चलनलागोधाइइतउतभारि ४२ भाजिइतउतचलन लागोतबहिंशिवधनुतानि । तानिशरहनिकाटिद्वैकरि दीनपुहुमीडारि ॥ डारिअस्त्रनभाजिगेसुरफिरेतेऊसा जि । साजिसुरफ्फरिसुमनकीन्हीअसुरसबगेभाजि ४३ दोहा ॥ प्रविशोशिवमुखतेजतिहिशिरशिवपहिरोमाल ॥ जालन्धरकरमरणलखि भेसुरसुखीविशाल ४४ ॥ छन्द रामगीतिका ॥ बजनलागेडमरुदुन्दुभितूरभेरिमृदंग । शंखपणवनजाइहरषेसुरनकेसबअंग ॥ करहिंबरपासु

मनहरपरइन्द्रआदिकदेव । गानगणगन्धर्वकरहींनृत्य अप्सरसेव ४५ रहीपूरिसुगन्धबहुविधिजहांहररणठाम । आइसुरगन्धर्वगावनलागहरगुणग्राम ॥ जैतिजैहरवारबहुकहिगावयशअजवेद । जोरिकरयुगकरतविनतीहरोहेहरखेद ४६ मारियहखलदुःखटारोकियोदेवसनाथ । देवअवसबभागलेहैंनाइतवपदमाथ ॥ लहेहमसबभांतिआनँददेखिपदजलजात । तिहीबेलाआइयोहरिकरतजैहरपात ४७ सुनहुशंकरवधोशम्बरअधिसुवनबलवान । सकलदेवनदियोआनँदराजिदियमघवान ॥ कहतहरिकरजोरिहरसोंअमितमहिमानाथ । गुणअपारअथाहराउरकहतश्रुतिबहुगाथ ४८ तेउगावतबहुबतावतनहींपावतपार । तुमहिंउतपतिकरतपालनकरतपुनिसंहार ॥ नहींहैतवआदिअन्तहुकहैकोकिमिगाइ । वसहुममउरव्योममेंसुरतारतुमउडुराइ ४६ देवसबतवशरणआयेकरहुकृपाअछीन । हरणअघभुजइन्दुमूर्द्धासोहअम्बकतीन ॥ सोहउरनरमालकरमेंचक्रचापकराल । सोहअहिउपवीतदिगपटपंचवक्त्रविशाल ५० सकलजगकीसिद्धिराजतवामभागसुअम्ब । सोहशिवअर्द्धंगताकेदासहमअवलम्ब ॥ भाषिइहिविधिविनयहरसोंगयेनिजनिजभौन । हरहुगिरिजासहितगणयुतकरतभेतवगौन ५१ ॥ दोहा ॥ हरनिजलोकहिजातभेमोमुनिइमिसंग्राम ॥ हरिदधिसुतबधवायऊ छलिवृंदातिहिवाम ५२ वृन्दाहीकेअंशतेतुलसीधात्रीजान ॥ रमाउमाशारदहिकेअंशनवृन्दामान ५३ तुलसीधारीशीशहरिवरदीन्हींनिजबानि ॥ कथाजुपूँछीतुलसिकीसो

हमकहौवखानि ५४ भोदधिसुतशिवअंशतेंताहिवधोह रआप । जियालालअघहरणयहकथाहरणत्रैताप ५५॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतोपाख्याने जियाललालद्विजकृतेभाषायांजालन्धरशिवसमरतुलस्युत्पत्तिवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ६ ॥

दोहा ॥ नाशकेतकरजोरिकह सुनियेसकलमुनीश ॥ जोकछुपूंछौअपरअबसोवरणौंधरिशीश १ ॥ छन्दगोपाल ॥ सुनिऋषिकहतभयेहरषाइ । यमशासनअबकहौबुझाइ ॥ यममारगपुनिकहौबखानि । जोसुनिहोइसकलअमहानि २ यमकररूपकहौपुनिगाइ । यमकरालभटकहौसुनाइ ॥ पापरूपअतिदुःखकराल । पुण्यरूपसुखमहाविशाल ३ लोभक्रोधअरुमोहअपार । तिनकोवरणिकहौविस्तार ॥ कालपाशयमदण्डबखानि । कहौहमारवचनउरआनि ४ स्वर्गनरककरवर्णनकरौ । वरणिनाथउरसंशयहरौ ॥ दानमानतपकहौबुझाइ । ब्रह्मवधादिपापसमुझाइ ५ इहिविधिप्रश्नऋषिनजबकीन । नाशकेतप्रत्युत्तरदीन ॥ यमशासनआसनजिमिगाथ । कहौंबुझाइसुनौमुनिनाथ ६ पिताशापजबहमकहँदीन । धर्मराजपुरगमनसुकीन ॥ धर्मराजकीअस्तुतिगाव । अर्द्धासनहमकहँबैठाव ७ ॥ दोहा ॥ अजरअमरमोकहँकियो सोसुनिपितुपहँआव ॥ जोउतदेखोजाइहम सुनियेतुमहिंसुनाव ८ ॥ छन्दगगमगीतिका ॥ धर्मनृपकीकथासुन्दर सुनियमुनिमनलाय । कनककोटसुरचितमणिकृतलेत चित्तभुलाइ ॥ पुरटमणिमयतासुकलशानिरखिअति सुखहोत । मनहुँशृंगसुरत्नसांनृह्लतेंइविधिउद्योत ६

सहसयोजनतासुविस्तरऊंचयोजनपांच । अष्टकोणवि
राजशालाचित्रहरिकीसांच ॥ चारिद्वारहुकोरअंतरस
हससहससुएक । चहूँद्वारनभीरपथिकनजातकौंकौंछेक
१० द्वारद्वारनधर्मकिंकरसोहसुन्दरदर्श । याम्यफाटकअ
तिहिदुस्तरघोरकिंकरतर्श ॥ पुरीमध्यसुसभाराजततहां
धर्मविराज । अर्यमासमतेजराजतसभाऋषिउडुराज ११
देवसाधकयक्षगंधर्वसिद्धअप्सरताहँ । रंभमैनकआदिनृ
त्यतदिव्यतनधरिजाहँ ॥ पूर्वद्वारहिजातआवतकहेयेसब
जौन । ग्रीष्मजलपटशिशिरऋतुदियजातइहिमगतौन
१२ पथिकहितपदत्राणदीन्हेपथिकहितजिनभौन । विप्र
कोदियबोलिविद्याजातइहिमगतौन ॥ दीनअन्नहुकाम
क्रोधहुलोभमदकोखोइ । मातुपितुगुरुचरणपूजेजातइहि
मगसोइ १३ भक्तिसुरद्विजचरणपूजहिंतीर्थमज्जहिंजेइ ।
रामभक्तिहिधरहिंउरबिचपापमगतजितेइ ॥ त्यागिपर
अपवादअहनिशिकाशिगयाप्रयाग । करहिंतीरथजात
उत्तरद्वारसोबड़भाग १४ कथाहरिकहसुनहिंहिंसात्या
गिधर्नहिधार । दारपरतजिपुण्यधारीजातपशिचमद्वार ॥
परधनहिविषसरिसदेखतनारिलखिनापुंस । धर्मरतइ
हिभांतिजेजनजातपशिचमपुंस १५ अमियसमतिनहेत
भोजनचढ़नहेतविमान । कथादक्षिणद्वारसुनुनृपकठि
नघोरमहान ॥ बकतमिथ्यापापकारीशीलबिननरजेउ ।
गुरूनिन्दपुराणवेदहुधामपोषकतेउ १६ धर्मशास्त्रहुपु
ण्यनिन्दकमातुपितुगुरुजौन । रामनामहिंजपनकबहूँ
जातदक्षिणतौन ॥ श्यामकायासुभटअगणितदेतपा
पिनत्रास । जियालालविचारियहदुखकरहुप्रभुगद

आस १७ अन्धकारअपारतहँकृमिकागश्वानअपार। तिक्षकंटकसर्पवृश्चिकव्याघ्रभालुपुकार॥ मांसभक्षीगृद्धआदिकजीवअगणितदीश। पाइआयसुधर्मनृपकीचलेभटकरिरीश १८ परशुतोमरगदामुद्गरपरिघअसिश्रीखण्ड। अरिपापिनडारिनर्कनदेतबहुविधिदण्ड॥ महाघोरसुनर्कअगणितकहौंकिहिविधिगाइ। महापापीसहतबहुविधिदुखअगममहाइ १९ नर्ककुम्भीपाकइकहैं महाकठिनकराल। नामरौरवमहारौरवनर्कमहादुशाल॥ दुष्टजीरणअघहुदारुणकृमीकूलहुमान। महाहवकारून नर्कहुअसीपत्रहुजान २० तूनिनादहुमहापापहुनर्कये मुनिआहिं। पूर्णजूपाआपगाकृमिरक्तबहजिहिमाहिं॥ पूर्णविष्ठाकूपहूकणनाशनर्कमहान। दुःखकासहुअतिअतर्कहुएकअक्षहुमान २१ एककुक्षाअन्धजीरणमहादहअघठाम। महारौद्रहुतैलयन्त्रहुमहाअष्टहुनाम॥ घृतकतप्तहुमहातापहुअशुभनर्कहुमानि। महाशीतलकिरिमिसंकुलबालुतप्तहुजानि २२ कुधररोहनकुम्भनेत्रोचटहुरोहनशूल। शिलारोहणतिक्षचुंचकगृद्धतहँअघमूल॥ गृद्धवायसतुण्डतिक्षणसिंहगर्जतजाहँ। कहेनर्कनईशयेगनिनर्कअगणितताहँ २३ जौनविधिजिहिकर्मतिहिविधिनर्कताकेहेत। डारिकिंकरसमननर्कनविविधताड़नदेत॥ तहांरक्षाकरनहारोभजनरघुपतिएक। जियालालविचारियहमनकरहुप्रभुपदटेक २४॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादे नाशकेतोपाख्याने जियालालद्विजकृतेभाषायांनरकवर्णनोनामदशमोऽध्यायः १०॥

छन्दरामगीतिका॥ सुनहुअबमनलाइसुन्दरकथाहेमनि

नाह । जासुडरहरिनामराजतकरैयमतिहिकाह ॥ तवहिंऋषिसबकहनलागेसुनहुऋषिसुतज्ञानि ॥ कथानकनकहहुप्रथमहिंवहुरिकलुकबखानि १ ॥ दोहा ॥ नाशकेतकहसुनहुमुनि नरकमहादुखभारि ॥ पापीकोटिनहमखले तुमसनकहतपुकारि २ ब्रह्महंतगोहन्तजे पितहंत अघखानि ॥ बालवृद्धघातादिजे परदाररतजानि ३ वक्तादोषपरावके अरुघातकविश्वास ॥ गुरुनृपनिन्दक स्वामिहत द्रव्यपराईआस ४ परदुखदैनिजकामकिय कियव्रतभंगपराव ॥ पतिव्रतातियछांड़िकै परतियसँग मनलाव ५ विषदातापरद्रोहकृत निन्दतपरधमकाहिं ॥ अभिमानीअतिपापरत तियसोंनाहिंअघाहिं ६ पापी दुष्टमलायतन लोभक्रोधमदमान ॥ बिनाअर्थसाक्षीभरहिंदैदैअमितप्रमान ७ परअकाजपरदुखनिरखिसुखी होइँबहुभांति ॥ परसुखलखिइमिदुखलहैं मरीमानुजनुराति ८ निजसुखसोंसुखकोलहैं परसुखपावतपीर ॥ पापजटितनरअंधमति कायरकूरअधीर ९ द्विजधनहारकदेवधन हारककृपशुचिहीन ॥ विप्रदानसुखसोंदियो लियोबहुरिकैछीन १० भूहर्त्तागृहहारजे परअपवादीमूढ़ ॥ फलपुष्पिततरुकाटहीं मारहिंजीवविमूढ़ ११ दुष्टाचारहुदयाबिन धर्मशास्त्रनहिंनेम ॥ वधतजीवनहिंदुखगनै गुरुवचसुनेनप्रेम १२ एतेकहेजुअपरबहुपरतनरकमेंजाइ ॥ जियालालशठरामभजु सकलकाजविसराइ १३ काहूदुखनहिंदीजिये जेतेजीवजहान ॥ जियालालहरिहालभजु कालशीशमड़रान १४ ॥

नाशकेतोपाख्यानेसभायांनरककर्मवर्णनोनामैकादशोऽध्यायः ११॥

छन्द अतिगीत ॥ नाशकेतसुकरिप्रणामहिकहतसुनौ सबऋषिहुकथाहि । धर्मराजपठावदूतनआयुहीननर लेनयथाहि ॥ दूतयमकेअरिबलिष्ठमुजाइआयुगत्तनर हिलयाइ । धर्मनृपशुभअशुभलखिकैतिहिसमानदियफ लहिबताइ • १ ॥ दोहा ॥ सुनहुनृपतिमनलाइकै सुन्दरक थारसाल ॥ धर्मसभाजेमुनिरहैं शिखिसमतेजविशाल ॥ २ ॥ छन्दरोला ॥ सोहततहँमुनिजौननामतिनकहौंबखा नी । जातकर्णइकनामकृष्णद्वैपायनजानी ॥ सम्वर्त्तक दुर्वासमरीचिहुगौतमजानो । भारद्वाजदधीचिभृगुगर्गा लवअनुमानो ३ सनत्कुमारपुलस्तिभास्करमांडविना मा । याज्ञवल्क्यसुतगाधियोनिगेसुरतपधामा ॥ सौमि त्रहुपृथुनामशूरसमवर्चसधारी । जियालालकिमिकहै तहांबहुमुनितपधारी ४ धरिपूषणसमतेजवेदवेदान्त बिचारैं । धर्मशास्त्रमीमांसआदिबहुज्ञानउचारैं ॥ चित्रगु प्तसुनिसोइस्वर्गनर्कनफलजोई । धर्मायसुप्रतिपालिदे तसुखदुखकोसोई ५ धर्मराजविज्ञानज्ञाननिधिधर्मम हाई । आयसुलहियमदूतकरतकारजमनलाई ॥ द्वादश रविसमतेजधर्मशिरमुकुटबिराजत । कुण्डललोलकपो लदण्डकरमेंछविछाजत ६ महिषाऽसनआसीनदीर्घत नवरणिनजाई । कलुककालअनुरूपकरालहुवदनदिखा ई ॥ धर्महेतकरुचरितस्वर्गभोमहिनरचाहैं । पापकर्मय मदण्डदेतनर्कनविचदाहैं ७ पापिनकहँयमदूतदेतनर्क नबिचडारी । धारिभयानकरूपदण्डदैकहहिंपुकारी ॥ कीन्हौंकिमिशठपापकरहुअबपापबहूता । डारहिंकुम्भी माहिंक्रोधकरिकहियमदूता ८ येहप्रभावहमजाइसभा

यमराजविलोका । पापीअतिबिल्लातदेखिचिल्लातस
शोका ॥ जोपापीजिहिभांतिताहितिहिनर्कहिल्यावैं । आ
ज्ञाचित्रसुगुप्तजौनविधिकहिसमुझावैं ९ पुनितैयमके
एसदूततिहिसमयसिधावैं । लखिताकहँयमराजरूपअ
तिविकटदिखावैं ॥ दूतकहैंयमपाहिंब्रह्मवधयहप्रभुकी
न्हा । डारहुकुम्भीपाकशठहियमआयसुदीन्हा १० ल
हिआयसुयमराजकुम्भिमहँदीन्होंडारी । बहुविधिताड़
नकरहिंविविधआयुधतनमारी ॥ अपरकथामुनिसुनहु
वंशविधुनृपतिवदारा । करहिंधेनुवधजेइकल्पशतरौरव
डारा ११ तैलयन्त्रमहँपरहिंगर्भयुततियजेमारहिं । छु
राधारमहँपरहिंगुरूअरुस्वामिसँहारहिं ॥ वेश्यासँगरत
जेइकटहिंतनकालसूत्रमहँ । तैलपाकमहँपचहिंहतहिंजे
बालवृद्धकहँ १२ ॥ छन्दहरिपद ॥ दीनदाननरहारकजो
इगुंजपाकतिहिडार । काटिशीशकरिछिन्नभिन्नतनकर
तअमितविधिमार ॥ पढ़तवेदकृतअशुभकर्मजेचक्रन
कैतेजाइँ । चौरपजीवकदुखदविनार्थभक्ष्याऽभक्ष्यजेखा
इँ १३ परनिन्दकपरअघलखसोऊनर्कभयानकजात ।
पढ़तजाहिसनगुरूनमाननतनर्कहिपरिपछितात ॥ कन्या
दानविघ्नजेकरहींताम्रकांशपटहार । असीपत्रमहँते
नरपरहींलहतअमितयममार १४ ॥ छन्दचंचला ॥ दीन
मित्रघातकारअग्निकुण्डबीचपाच । गुरुअर्थहारकीट
नर्कमाहिंपाचसाच ॥ भूपपाहिंक्रूरबातबाचन्यावझूँठ
भाख । ताहिघोरत्रासदीनकोलनर्कमाहिंराख १५ ॥
छन्दनरेन्द्र ॥ नेत्रोपादनकैतेजावैंसदादुष्टवचभाखैं । सुनत
सदापरपापकानदैकर्णछेदतिनराखैं ॥ होमक्रियाबिन

भोजनकारकविष्ठकूपमेंपरहीं । सूचीमुखनरकहितेजाविधि प्रलत्रणजेहरहीं १६ ॥ छन्दरतिलेखा ॥ परतीयलखितो भवहुमंदिकारी । सुरदेवमहिनिंदउरमाहँधारी ॥ नरती र्थधर्मशास्त्रकरनिन्दजोई । गतशूलिनरकाहिनरपापिलो ई १७ ॥ दोहा ॥ महाकष्टयमदेहितहँ काकश्वानअरुगृद्ध ॥ तासुमांसभक्षणकरें जोनिन्दकपरसिद्ध १८ इहिविधिहमदेखतभयेपापीतहांअकूत ॥ आयसुलहिधर्मराजकी नरकडारयमदूत १९ चित्रगुप्तधनज्ञाननिधि रविमप्रतेजप्रकाश ॥ लिखहिंनिरन्तरगुणगणन शुभअरुअशुभप्रकाश २० चित्रगुप्तदिनप्रतिलिखहिंकर्मशुभाशुभजेत ॥ अन्तकसोइविचारिकै अन्तसमयफलदेत २१ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतोपाख्यानेजियालालद्विजकृतेभाषायांनरकवर्णनो नामद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

दोहा ॥ वैशम्पायननृपतिपहँ नाशकेनमुनिपाहिं ॥ कहतअपरसुनियेकथा सुन्दरधरिउरमाहिं १ ॥ छन्द भुजंग ॥ रचीएकभूमीमहाज्वालमालावनीताम्रहीसोंप्रलैअग्निमानो । तहांतैसदापापिनेदूतडारें जरेंसोदियापांखिजाभांतिजानो ॥ यमैदूतभारीमहाक्रोधधारीअतीतिक्षदन्ताशिरौकेशभारी । नखौतिक्षवालेतनोपीनकालेमहामारुठानेंनरकानडारी २ ॥ छन्दअपराजिता ॥ हनतबहुतभांतिरोइथरागिरा । झरतअमितगातअंगमईपिरा ॥ हननतबहिंलागमारिअसीगदा । सियरमणहिंकीयगाननहींकदा ३ ॥ छन्दमंजुभाषिणी ॥ तिहिभूमेंझारइकाग्रमझालहैं । झहरातघोरअतिज्वालमालहैं ॥

तहँपापिनैयमभटालयावहीं । परदारभोगिनकहाँबँधा
वहीं ४ ॥ दोहा ॥ घोरनादयमसुभटकरि बहुविधिताड़हिं
तासु ॥ रेलम्पटपरयुवतिहर करुआलिंगनत्रासु ५
जिहिविधिपूरबभोगकिय सोईभगयहजान ॥ यहकहि
ताकहँबांधिकैताड़नकरहिंमहान ६ पायँनशृंखलडारिकै
लिंगडारिभगमाहिं ॥ लिंगहीनयद्यपिभयोतद्यपिछोड़
तनाहिं ७ रुधिरबहतबुबुकारिदै गिरतमांसबहुखण्ड ॥
कढ़तजीवतनसोंनहींदूतदेतबहुदण्ड ८ परदाराारतभां
तिइहि पावतदुखमहिपाल ॥ मद्यपभक्ष्यअभक्ष्यकृत
तिनकेसुनियेहाल ९ तप्ततैलजोयन्त्रहै तामहँडारैंतासु ॥
मूर्च्छितहोवैजबहिंतन पुनिकाढ़हिंतिहिआसु १० गलपा
दनशृंखलकसहिं करहिंअस्त्रपरहार ॥ पुनिडारहिंतिहि
यन्त्रमें पुनिकाढ़हिंपुनिडार ११ छन्दरामगीतिका ॥ कू
टसाक्षीदेहिंबहुविधिकूटकर्महिकार । असीयन्त्रहिपरहिं
सोनरजासुमधिवड़िधार ॥ देतपरकहँदुःखजेनरव्याधि
कूपहिजात। चोरघृतकेनरकघृतमेंपरतकष्टितगात १२
तैलहारकपरतरौरवक्षीरदधिजोहार । महानरकहिपरत
सोनरलहतदुःखअपार ॥ तैलनरकहिजातसोनरचोर
फलकोजोइ । अग्निवनमेंदेतजेगतअग्निकुण्डहिसोइ
१३ स्वामिघातकलहतबहुविधिअस्त्रशस्त्रनमार । लाल
खम्भहिबांधियमगणकरतअस्त्रप्रहार ॥ त्यागिनिजप
तिपुरुषपरसोंकरतरतितियजौन । अग्निखम्भहिबांधि
दृढ़करिसुभटयमबलभौन १४ तीयकोनररूपखम्भापु
रुषकोतियरूप । खम्भएकैहोतहैद्वैतीयनरसोभूप ॥ अ
तिहिदारुणज्वालमालाखम्भमेंझहरात । मनहुँबड़वाऽन

लहुतेअतिघोरशिखिमहरात १५ बांधितहैंतियपुरुष
पररतहेतयमभटत्रास । कहैकोतिहिसमयकोदुखगिर
तकटिकटिमांस ॥ बांधिश्रृंखलपायँहाथनग्रीवतौंकहि
डारि । मारुधरुधरुमारुधरुधरुकहतशब्दपुकारि १६
हनतमुद्गरगदातोमरपरशुशूलकृपान । बहतशोणितबपु
षबहुविधिंतदपिकरतकृपान ॥ देतदुखइहिभांतिअगणि
तहनतशस्त्रमहान । लखोपरतियमातुसमनतुलहोंदुःख
अमान १७ क्रूरचितशठपापरतनरकलहमेंरतजेत । क
रहिंद्विजसनवादबहुनिजवादकेजयहेत ॥ निरयनरकम
हानमेंयमदेततिनकोडारि । काढ़ितासोंडारिरौरवदेतब
हुविधिमारि १८ कीनद्विजसोंवादबहुविधिलेहुफलशठ
सोइ । भाषिइहिविधिहनतआयुधगिरतसोजड़रोइ ॥
हरहिंरत्नअभर्णआदिकपचहिंकुम्भीसोइ । नरककुम्भी
विकट परतैंभिन्नशिरपदहोइ १९ शास्त्रसुरगुरुविप्रनिंद
कपरहिंशोणितजूप । छिन्नजिह्वाहोतयमभटहनतआयु
धभूप ॥ क्षुधारतगृहबालवृद्धहुकरतभोजनआप । कर
तभोजनपिशितसमसोमहानिरदयपाप २० करतति
नपरमारुकिंकरशमनअतिबलवान । हनतमुद्गरपरिघ
तोमरखातपलहरिश्वान ॥ जियालालसुचित्तनिजको
रामपदअरविन्द । देहुसबतजिनामवारिधिजाइजीवन
विन्द २१ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतो-
पाख्यानेजियालालद्विजकृतेभाषायांनरकवर्णनो
नामत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

छंदचौपाई ॥ सुनहुमुनीशभूपमनलाई । अपरकथा

कछुकहौंबुझाई ॥ तालवृक्षयकघोरतहांहै । हाहाकारसु
होतजहांहै १ अमितपतितबांधेतिहिमाहीं । लटक
तसदाछुटतसोनाहीं ॥ योजनएकउच्चसोराजै । ज्वाल
मालतहँअमितविराजै २ विस्तरयोजनपांचसुहावा ।
जातवेदसमशोभापावा ॥ शृंखलबांधिचरणकरमाहीं ।
टांगिदियोतहँपतितनकाहीं ३ क्षुधाप्याससोंव्याकुल
भारी । हाहाहाकरिकहहिंपुकारी ॥ हेहरिलीजैहमहिंउ
बारी । देतदुःखसुनियमभटभारी ४ मारुमारुधरुधरुइ
मिभनहीं । मुद्गरगदाशूलअसिहनहीं ॥ अघविशालनि
रदययमदूता । ताड़नकरहिंमहानअकूता ५ टँगेअघी
लहदुखबहुतेरा । ऊर्ध्वपादशिरखोहघुसेरा ॥ इहिविधि
भूलहिंअघीअपारा । वरणिनजाइदुसहदुखभारा ६
बारबारबहुपापीगिरहीं । रहितप्राणभूतलमधिपरहीं ॥
कहहिंदूतसोफलअबलेहू । पापछांड़िनाहिंपुण्यकरेहू ७॥
दोहा ॥ रेरेपापीदुष्टशठकियबहुद्विजअपराध ॥ अन्नवारि
दीन्होनहीं मानोनहिंद्विजसाध ८ ग्रासअर्द्धनहिंद्विजहि
दियविष्णुमन्त्रनहिंजाप ॥ कागश्वाननहिंबलिदियो ल
खोअचलजगआप ९ आगतनहिंस्वागतकियोपितृकर्म
नहिंकार ॥ पञ्चयज्ञशुभकीननहिं भक्तिनहरिउरधार १०
रेअभिमानीमन्दहरि कथाश्रवणनहिंकीन ॥ तीर्थअति
थिद्विजदेवके सेननहिंचितदीन ११ सोफलभोगनकर
हुअब भाषतइमियमदूत ॥ राखतबालूततमें ताड़नक
रतअकूत १२ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतोपाख्याने
जियालालद्विजकृतेभाषायांनरकवर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

छन्दरामगीतिका ॥ अपरवर्णतकथाहमसोसुनहुमुनि दैकान। रूपयमकोकहहिंदक्षिणद्वारजाअस्थान॥ अमि तपापीआइंताथलल्लहलताड़नकाहिं। कहततासुवखानि वाहनसुनहुभरिउरमाहिं १ कबहुँकोकिलकबहुँमाहिपक बहुँगृध्रसवार। कबहुँसारसस्यारकबहुँकुरंगपरकोवार॥ घोरज्वालकृशानुकीज्योंनेत्रत्योंविकराल। ऊर्ध्वकेशरुकु नपमेचकमहाउदरविशाल २ अङ्गभयकृतघोरउपघन दीर्घकायमहान। कोउरुष्टरुपुष्टकोऊकोउअतिबलवा न॥ कोउपावनकोउपातकिकोउदुखदमहान। अतिभया वनमगनपातककरतपापनिदान ३ कोउवारणआस्यको ऊपंचमुखविकराल। कोउरासभकोउव्याघ्रहुकोउभालु विशाल॥ ग्रामसिंहहुसर्पवृश्चिकमार्जारहुजान। बांधि कटितटनीलअम्बररक्तनेत्रमहान ४ अस्त्रशस्त्रनबांधि शूलरुशक्तिदण्डकृपान। गदामुद्गरपरशुपट्टिशभिन्दिपा लअमान॥ धर्मपतिकीपाइआयसुकरतकारजतौन। देत पापिनदण्डसुनियेअपरसुनिगुणभौन ५ असीपत्रजुदु खदकाननपत्रअसिसमतासु। पापवन्तनगातछेकैकटत हैवपुआसु॥ कटतकायसुवारवारहिंकढ़तनाहींजीव। कूटकर्मावालघातीमहापापिअतीव ६ आशघातीआदि पापीदीखशृंखलबांध। असीपत्रसुवृक्षमाहींदीखकोटि नसाँध॥ जूपकामितिहिमध्यराजतसर्पवृश्चिकजाहँ। श्वा नअरुगोमायुवायससिंहगृध्रहुताहँ ७ ॥ दोहा ॥ पापीव हुकटिकटिगिरें असीपत्रकीधार॥ श्वानस्यारभक्षणक रें धरिधरिअघीअपार ८ ॥ छन्दरामगीतिका ॥ तालवृ क्षसुफलितमानहुँबँधेअघिइहिभाँति १ गिरतमहिशिर

पादकरकटितरसाकिटहरिखाति ॥ वृक्षऊपरखातबाय सगृध्रतुण्डप्रहारि । भूमिवृश्चिकश्वानवृकअहिखात लरिधरिफारि ६ बांधइहिविधिशमनकिंकररक्तकोउत हांन । सुनहुमुनिइककालराजतकरततासुबखान ॥ कह तनामकृतांतजाकोकालबपुभयकारि । हस्तदक्षिणद ण्डलीन्हेबामफरसाधारि १० महिषवाहनसिंतीविग्रह स्रवतशोणितअक्ष । धर्मपतिसममुकुटधारेतासुभटअ तिदक्ष ॥ चलततिहिसँगप्रेतगणसब करतआयसुता सु । सुनतमुनिगणप्रश्नकीन्हों नाशधुजसनआसु ११ होतअतिबलवानकौणप किविधिमारतकाल । नाश केतसुदियोउत्तरसुनहुमुनियहहाल ॥ प्रथमबाठरसुव ननिजभटअसुरलेनपठाव । अंशुमालीसूनुकिंकरजाइ विनयसुनाव १२ अजितविग्रहगनतनाहींदूतयमकेतौ न । घूमिरविसुतपासआयेसुभटयमबलभौन ॥ दा सआपनदेखिहारेलियकृतांतबुलाइ । हालसुनतकृतां तआयेशीशनायेपाइ १३ देखिशमनकृतांतकाहींकहत भेसुखपाइ । अहोतुमबलवन्तभारीअसुरलावहुजाइ ॥ हैमहाबलपुष्टभारीमरनरणकृतभारि । सुभटसबममभा जिआयेजाहुलावहुमारि १४ धर्मकेइमिवचनसुनिकैच लरिसाइकृतांत । अस्त्रशस्त्रनधारिलीन्होजासुबलनहिं अन्त ॥ अमितदललैजातभेजहँदनुजपतिबलवीर । कहोतेरीक्षीणआयुर्दायचलुयमतीर १५ सुनतवचन कृतांतकेइमिदनुजपतिबलवान । धारिमुद्गरखड्गतोम रगदारणसमुहान ॥ परशुधनुश्रीखण्डपट्टिशवज्रशूल अमान । चक्रशक्तिरुपाशकरधरिकरतयुद्धमहान १६

भल्लंतीरकमानपरिघहुभिन्दिपालभुशुण्डि । कड़ाबीन रुतबलखुखरीविविधआयुधखण्डि ॥ करतदोनोंसमर अद्भुतनखन्दन्तनकाटि । करतरणघनघोरयुगभटच लतइतउतदाटि १७ आयुहीनपिशाचताते हारियोसो आसु । मारितबहिंकृतांतशृंखलबांधियोद्रुततासु ॥ क रतताड़नेभांतिबहुलैचलेयमपुरकाहँ । सपदिपहुँचेजा इकैपतिधर्मराजतजाहँ १८ ॥ दोहा ॥ धर्मराजतिहिल खतभे महाभयानकभेश ॥ नखरुलोमविकरालखि दियदूतनउपदेश १९ चित्रगुप्तपहँजाहुलै यहअतिप तितविशाल ॥ धर्मशास्त्रनहँशोधिवै देहैंनरककराल २० छन्दरामगीतिका ॥ धर्मकेयेवचनसुनिकै शमनदूतसुजान । असुरकोलैजातभेद्रुतचित्रगुप्तस्थान ॥ चित्रगुप्तनिहा रिताकहँजानिअतिअघरूप । धर्मदूतनदियोआयसु जाहुलैकृमिजूप २१ प्रथमनरकसुकाकगृध्रमडारियोइ हिजाइ । फेरिरौरवमाहिंडारवबहुरि सिखिअघलाइ ॥ डारिपुनिश्रमकुण्डमाहींरुधिरकुण्डहुमाहिं । डारिकुम्भी माहिंदीजौबांधिशृंखलकाहिं २२ सुनतभटइहिभांति वाणीविविधताड़नकारि । बांधिशृंखलपादहाथनदीन नरकनडारि ॥ सुनहुमुनिजगजन्मजोसमस्वप्नकेहैसोइ । रंकधनिसुखिदुखिअबलबलिक्षीणथूलहुजोइ २३ मू र्खपण्डितगुणीअगुणिहुयुवावृद्धरुबाल । सुराऽसुरचर अचरगर्भहुप्राप्तजगवशकाल ॥ कौनआनँदजन्मको अरुमृत्युकोकाशोच । स्वप्नकेसमगनतज्ञानीगनतसां चीपोच २४ मातुपितुसुतनारिकाकीकाहिकोपरिवार । कर्मशुभअरुअशुभगहिलहजन्मबारहिंबार ॥ सुनहुमु

निजेपापयोनिहुपुण्ययोनिहुजौन। व्याधिग्रसितहुदीर्घ आयुहुअज्ञानिहुतौन २५ उच्चवंशकुवंशकरिकैपुण्य स्वर्गहिजात। पापकरिकैजातनरकहिवातयह्मविख्यात॥ पथिकजिहिविधिमिलतमारगजातनिजनिजकाज। बैठिन्नएकतीरजिहिविधिगनियतिमिजगसाज २६ लहतजिमिविश्रामबेतिमिस्वर्गनरकहुजान। कर्मशुभअरु अशुभजाविधिकरतसोफलमान॥ जियालालविचारि देखौकर्मफलनहिंआन॥ स्वप्नसमसंसारदृढ़गुणिराम पदकरुध्यान २७॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतो-
पाख्यानेजियालालद्विजकृतेभाषायांकालासुर
समरवर्णनोनामपञ्चदशोऽध्यायः १५॥

दोहा॥ अपरकथासबमुनिसुनहु धर्मयुक्तइतिहास॥ पूरवउत्तरद्वारको अबमैंकरतप्रकास १॥ छन्दरामगीतिका॥ करतपरउपकारजेनरधर्मशीलहुजौन। ताहुहितवरवा रितहँवांद्रुमलतासुखभौन॥ क्षीरसरितहँसुभगराजत पञ्चअमृतजासु। बहतनिरखतहोतआनँददहतपातक आसु २ पटभूषणविविधराजतअमितसुखसबकाल। अमितविद्याधरीनृत्यतगीतवाद्यरसाल॥ नादसुरभरि करहिंमानहुँहनतशायककाम। श्रवणकुण्डलआदिभू षणसोहशोभाधाम ३ अतिहिकोमलअंगघृतसमतड़ि तसमलपकानि। कमलमृगतिमिखंजरीटहुशोभहरद गजानि॥ कलीचंपकअङ्गशशिसमकलाषोड़शसोह। अमितरतिसमरूपजिनकोनिरखिमुनिमनमोह ४ तहां अमितविमानराजतचमरविञ्जनराज। लेपिअङ्गसुगन्ध

वहुविधिधूपधूमहुभ्राज ॥ कहौंकिहिविधिसाज़पुष्पोदक
समीपवखानि। धर्मशीलविहारकारकपूर्वउत्तरआनि ५
मणिनयुतसोपानपुष्पोदकसुगंधितरेत। सुखदातिनहित
वस्त्रभोजनतुलादानहुदेत ॥ मानयुतगोभूमिकंचनदेत
जेसुखपाइ। कूलपुष्पोदकसरिततेमनुजविहरतआइ ६
क्षीरयुतमिष्टान्नद्विजकोदेतभोजनजौन। सेवद्विजपदवि
नयसंयुतजातइहिथलतौन ॥ अतिथिआगतदेखिहरख
हिंमधुरबोलहिंवैन। अशनआसनकन्दमूलहुदेतजेवु
धिऐन ७ तिहिजिमायप्रणामकरिकैभाग्यवर्णतआप।
विप्रउत्तमवंशजेनरकरतमखहुतजाप ॥ करतरतिऋतु
कालतियसोंद्रोहसबसोंत्याग। जाइपुष्पोदकनिकटते
लहतसुखवड़भाग ८ कृतविचारिअधर्मधर्महुज्ञानिअ
रुविज्ञानि। करतअपसोद्रोहताहूसोहितैकरिमानि ॥
दयाशीलसमेतसंयमप्रेमद्विजपदजासु। धर्मकारकअ
तिउदासीप्राप्तसरिततटतासु ९ समरदृढ़क्षितिपालहुखि
लखिहोतअतिअनुकूल। सत्यशीलहुप्रजापालकजात
सोसरिकूल ॥ वैश्यद्विजपदहेतुपालनपशुविनीतउदार।
दानदायाश्राद्धश्रुतिवचकरतपुनिव्यापार १० ॥ दोहा ॥
चढ़िविमानतेजाहिंजनपुष्पोदकसरितीर ॥ चारिवर्ण
निजपथतजैंताड़नलहैंगँभीर ११ पञ्चागिनिव्रतसाध
हींकोवादिककोत्यागि ॥ देतक्षुधितलखिप्राणसम भो
जनभिक्षामांगि १२ तेईसुभगविमानचढ़ि जातसुखद
अस्थान ॥ काममनोरमधामसो करतविहारतहांन १३
अन्नदानसबकालमें देतजुसरिततटजात ॥ दधिघृतक्षीर
हुसुरभिहू देतदानहरषात १४ अर्द्धमासप्रणयुतअश

न देतधर्मयुतजोइ ॥ शरणागतरक्षाकरत जातसरित तटसोइ १५ पीछेभोजनप्रथमही दानशक्तियुतदेत ॥ पुटमुक्तापटदानदै पावतसुभगनिकेत १६ मणिप्रबाल जेदानकृत द्विजनसप्रेमबुलाइ ॥ पावतशुभविश्रामते पुष्पोदकतटजाइ १७ छत्रउपानहवारिपय विप्रहिंअ शनकराइ॥ देतदानदण्डवतकरि चढ़िरथसुरपुरजाइ १८ गजहयउष्ट्ररुरथउरवि देतअपरजेदान ॥ जातसुचढ़े विमानतहँ जहँगन्धर्वस्थान १९ अपरदानजेद्विजन कहँ देतसप्रेमबुलाइ ॥ जातस्वयम्भुकलोकते अति आनँदसरसाइ २० भूरुहरोपतभूमिमें कन्यादानजुदे इ ॥ नारायणपुरकल्पभरि बासकरतनरतेइ २१ ब्रह्मा आदिकसुरनसँग क्रीड़तविविधप्रकार ॥ दानरहितजे जगतमें तेनरअधमअपार २२ शूकरश्वानसमानते वृ थाजन्मजगजान ॥ जियालालभजुरामपद तजितृष्णा मदमान २३ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतोपाख्याने जियालालद्विजकृतेभाषायांस्वर्गसामावर्णनो नामषोडशोऽध्यायः १६ ॥

दोहा ॥ अपरकथाअबसुनहुनृप उत्तरधर्मविचार ॥ शुचिरमणीकहुसुभगअति शास्त्ररुधर्मप्रकार १ महा सुपावनदूततहँ धरेधर्मकररूप ॥ अन्नवस्त्रधनऊर्जइ पु पौषमावदियभूप २ मेषराशितेकर्कलग रविपयवा रिजुदेइ ॥ ऊर्जमासभरिव्रतकरहिं रविमण्डलगततेइ ३ अन्नदानदुर्भिक्षमें जाम्बूनदसुभिक्ष ॥ तेनरभोगत पुण्यकहँ स्वर्गलोकप्रत्यक्ष ४ पूजहिंविष्णुहिभक्तियुत

करहिंचराचरहेत ॥ स्वर्गहिजातप्रयासबिनुपुनिअप वर्गहुलेत ५ शोभितविविधविमानतहँ धर्मराजनृहँ सोह ॥ चैकवाककौहंसयुतगजहयशिखिमनमोह ६ सा रसशुककंचनवरण शुद्धस्फुटसिन्दूर ॥ नीलहुध्वजाप ताकयुत रहेअमितपरिपूर ७ शीतलमन्दसुगन्धयुत त्रिविधसमीरबहन्त ॥ बहुविमानराजतसुखद निरखत पातकहन्त ८ आयसुराजाधर्मकीचढ़िचढ़िधार्मिकलो ग ॥ जातसकललोकनबिषे करतअमितसुखभोग ९ सदाधर्ममेंमगनरहु वृथानपलकविताउ ॥ जियालाल शठसकलतजि रामचरणमनलाउ १० ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतो
पाख्यानेजियालालद्विजकृतेभाषायांस्वर्ग
वर्णनोनामसप्तदशोऽध्यायः १७॥

सोरठा ॥ सुनहुनृपतिधरिधीर सुन्दरकथाविचित्रय ह ॥ पुष्पोदकसरितीर सुन्दरविपिनविशालअति १ ॥ चौपाई ॥ पत्रपुष्पयुतअगणितशोभा । छायासघननि रखिमनलोभा ॥ बहतनीरतिहिमधिवरवारी । सुव रणसिकताअतिसुखकारी २ निर्मलफल्गुरेणुसुखकारि णि । त्रिविधसमीरतापत्रैहारिणि ॥ करतविहारसिद्ध गन्धर्वा । क्रीड़हिंअप्सरगणसुरसर्वा ३ लोटहिंधावहिं सिकामाहीं । आनन्दितप्रभुगानकराहीं ॥ नानाभांति कुतूहलकरहीं । आनँदउमगिउमगिहियभरहीं ४ ॥ दोहा ॥ अशनअमियसमकरहिंफल पीवहिंस्वादितवा रि ॥ बहुरँगकुसुमनगन्धलह अतिआनँदउरधारि ५ सिद्धियक्षगंन्धर्वयुत रम्भघृताचीसंग ॥ मैनकादिभूषण

सजेक्रीड़हिंसहितउमंग ६ ॥ छन्दगोपाब ॥ उन्नतकुच सँगकरहिंविहार। ओष्ठविम्बसमशोभाधार ॥ चन्द्रवदनिमृगलोचनिवाम। निरखतउपजतअँगअँगकाम ७ तालमृदङ्गझांझधुनिवीन। धार्मिकहेतसुनृत्यप्रवीन ॥ सहससहसइकइककेसंग। करहिंविहारभांतिबहुरंग ८ धार्मिकजनतहँकरहिंविहार। सरिपुष्पोदकृतटसुखकार॥ गुरुब्राह्मणसुरपूजतजौन। शास्त्रविचारदयाकोभौन ९ देहिंदानयाचककहँजेइ। नृत्यहिंहरिगुणगणकहितेइ ॥ हरिसमानतिहुँलोकनिहार। तेसरितातटकरहिंविहार १० जहँशीतोष्णक्षुधानहिंप्यास। शिशुवृद्धानहिंसकलविलास ॥ जेइहिजन्मकरहिंतपजाप। रामहिभजिनाशहितनपाप ११ सुखभोगहिंपुष्पोदकतीर। जियालालउरधरुरघुवीर ॥ तबहींतोरहोइकल्यान। जब सीतापतिमानसआन १२ अबयहकथासुनहुनृपधीर। दक्षिणद्वारघोरगंभीर॥ कलहकारपातकआरूढ़। दुराचारदुश्शीलहुमूढ़ १३ धर्माधर्मविचारनकार। जेनरमूढ़महाअघभार ॥ यमकिंकरइमिकहहिंपुकारि। सुनहुमुनीशसकलउरधारि १४ रेरेपापिमनुजतनपाइ। पापकरततनादियोविताइ ॥ चौरासीमेंहरिकागाव। तिहिउपरान्तमनुजतनपाव १५ क्रिमिपातककरिजन्मविताव। रामभक्तिबिनतुमदुखपाव ॥ पापाचारसदाकिमिकीन। धर्ममांझनिजचित्तनदीन १६ धृगधृगकहियमकिंकरभाख। नरकनमाहिंतिनहिंलैराख। जियालालजगजीवनयेह। करहुरामपदसहजसनेह १७॥

नाशकेतोपाख्यानेभाषायांपुष्पोदकसारिवर्णनोष्टादशोऽध्यायः १८॥

दोहा ॥ सुनहुनृपतियमलोकको मारगकठिनकराल ॥ सहसछियासीयोजनहु अगमपन्थअघिशाल १ ॥ छन्द गोपाल ॥ यमकिंकरपापिहिलैजात । महाघोरज्वालादरशात ॥ योजनइकविस्तरसोराज । पापिनहितअतिदुखकोसाज २ आगेभूमिमहाभयकार । योंजनसहसतिमिरविस्तार ॥ अग्रसितीघनघोरमहान । योजनसहसतासुपरमान ३ योजनश्रुतितहँविटपअपार । जानिपरतनहिंवारापार ॥ कछुकदूरितिहिआगेजान । योजनसहससुकुधरमहान ४ कंटकदुखदपन्थअतिघोर । अटवीकठिनसरिणअतिथोर ॥ योजनतीनिसहसविकराल । आगेसोहतअहिसमकाल ५ ॥ छंदहंसा ॥ तप्तबालुतिहिआगेअहै । क्षुधापियासतहांउरदहै ॥ पापिनदण्डदेहिंयमभटा । जिनकेअंगमनहुँघनघटा ६ करपादनकसिकैशृंखला । पापिनताड़नकृतयमभला ॥ त्यागिधर्मजिनपातककरा । सुभटगिराइतिनहिंतिहिधरा ७ ताड़हिंक्रूरवचनतिहिकही । पुनिउठावपुनिडारतमही ॥ ग्रीवपाशपदशृंखलहनी । अधमसुभावहनतभनिभनी ८ विधिवशमानुषकोतनुमिला । करिकरिअघखोयेशठखला ॥ करिविलापपुहुमीविचगिरा । भोमूर्छिततनभैअतिपिरा ९ रेरेमूढ़मन्दमतिमहा । रामनामकबहूँनहिंकहा ॥ सुलभकाष्ठजलदाननदियो । मानुषजन्मवृथाशठलियो १० नरतनुपाइविरथकरिदयो । पापबीजनिजमानसवयो ॥ तीरथमज्जनकबहुँनहिंकरा । होमयज्ञव्रतउरनहिंधरा ११ तिहिपातकदेखौयहकथा । यमअयनकीसुनीनकथा ॥ इहिविधिवचनभाषियमभटा । मा

रनलगेगदाअसिपटा १२ जियालालजिनरामहिंभजा ।
तिनहितसंचरअतिसुखसजा ॥ कहतदूतसुनुरेनिर्व्रिड़ा ।
किमिकीन्होपरतियसँगक्रिड़ा १३ मैथुनमाँहँसदारतर
हा । राममन्त्रकबहूँनहिंकहा ॥ मनवचकर्मपापजड़कि
या । उरविदेवगुरुदाननदिया १४ ॥ छन्दमाबी ॥ पटम
हिषिधेनुदियदानकबहुँना । रविराशिग्रहणशशिसूरत
बहुँना ॥ नरदेहअफलकियजगतजन्मलहि । दियकृष्ण
धेनुवैतरनीहूनहि १५ ॥ छन्दसारँग ॥ वैतारनीतारना
हेतहैजान । ऊबारिनीनर्कहूसेसुहैमान ॥ दीन्होनहींआ
सनौभोजनौकाहिं । भक्तीहिधारीद्विजौंकेपदौंनाहिं १६ ॥
छन्दचामर ॥ आतिथाहिआसनाहिसास्यनाहिदीनहै ।
प्यासभूखवानहूकिपीरहूतिहीनहै ॥ दानकाहुनाहिंकीन
पापिमूढ़बावरे । घोरभावपाथनाथपारकीमिजावरे १७ ॥
छन्दचंचला ॥ चालअग्रसूझनाहिंमूढ़अंधकारघोर । भा
षिएहिभांतिबांधिपाशयामदूतजोर ॥ एहिभांतिनाशके
तभाषमूनियूथपाहिं । कोटिनैकदम्बदीखएहिभांतिअ
ध्वमाहिं १८ ॥ छन्दरामगीतिका ॥ धर्मशास्त्रहित्यागिज
गजेपूजसुरद्विजनाहिं । दुखदद्विजकुलवचनगुरुउरधर
नरतमधुमाहिं ॥ गर्भअरुतियघातितीरथधर्महारकजौ
न । पललहालारतहुमैथुनहरतपरधनतौन १९ देवद्वि
जगुरुबालतियमुकबधिरअंधनपुंस । हरतजगमहँजौन
इनकीवृत्तिवित्तहिपुंस ॥ दारपररतविषदपातकिशौच
कर्मनहीन । लहतसोअघिपंथताड़नहोतहैतनुछीन २०
अग्निज्वालातासुमारगबरतहैतिनहेत । लोहितास्य
श्वक्षुकरिधरिरिष्टभटदुखदेत ॥ प्राणसमनहिंप्रथिकमा

नोयज्ञजपनहिंकार । धोइपदद्विजअशननहिंदियहोत अवसुखसार २१ चलहुगेकिमिपन्थदारुणक्षुधाप्यास अपार । सहहुकिमिइमिकहतयमभटकरतशस्त्रप्रहार ॥ दुर्गमार्गकरालअगणितकहततुमसोंगाइ । भयेपूँछतस कलमुनिमुनिसुवनसोंचितचाइ २२ मृत्युकेवशसकल जगहैकिबिधिनिबहैतात । दानकिहिकरिजाइपारहिक हौंहमसनबात ॥ मुनिनकेयेबैनसुनिकैनाशकेतवदार । कहोतुमसोपुण्यवर्णतजाइजिहिविधिपार २३ जौनवि धिभगतिहूपुरकोहरततिमिरअपार । इहीविधितेसकल जानौकालवशसंसार ॥ जहँनदाराभगिनिभ्रातापुत्र मित्रसमीप । धेनुधनगजभूमिपटकुलधामधामअरीप २४ ॥ छन्दस्वरूपी ॥ बाटमहाअतिहीभयकृत । संगन हींकोऊतिहिसृत ॥ कर्मधर्मसँगजानौवर । क्रोधलोभ कामादिकखर २५ ॥ छन्दविपिनितिलका ॥ सरिणमधि अमितसुखकष्टकहँपावहीं । शमनभटवहुरियमनिकट लैजावहीं ॥ कहतरविसुवनइहिकिविधिलायेइहां । क ठिनपथघोरबहुभांतिसोहतजहां २६ ॥ दोहा ॥ क्षुराधा रशुचिचक्रजहँ कालरात्रिशिखिज्वाल ॥ तिहिपुरकिमि परवेशकिय पूँछतइहिविधिकाल २७ सोरठा ॥ सुनहु नृपतिमनलाइ नाशकेतकहमुनिनसन ॥ कहतआचर- णगाइ सुकृतीपापिनकेसकल २८ पापीरूपकराल प्रेत कायभारीवपू ॥ सुकृतीरूपविशाल पुण्यपयोनिधिदिव्य तनु २९ यमकेसन्मुखजाइ पापीलखतकरालवपु ॥ सुकृती अतिसुखपाइ लखतदिव्यतनुधर्ममय ३० देखिधर्मति हिरूपकर्मशुभाशुभजानिकै ॥ सुनजन्मेजयभूपदेतता

सुअनुहरितफल ३१ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मचर्यआदिककृतीमहि
हयवारणदानि ॥ उष्ट्ररथादिकदानिनहिंमारगअतिसुख
खानि ३२ जौनदानइतदीजियेलहियतौनमगमाहिं ॥ ति
नपापिनकहँकष्टअति जिनदीन्होकुछनाहिं ३३ योजनस
प्तसहस्रमग कंटकतिनणताहँ ॥ वृश्चिकउरगकरालबहु
महाघोरपथजाहँ ३४ तिहिआगेयोजनसहसअवनीतप्त
महान ॥ तहँसुखपावैतबहिंनर देइउपानहदान ३५ प
न्द्रहयोजनअग्रतिहि ज्वालमालअतिघोर ॥ प्रयागादि
तीरथकिये कियेधर्मलहछोर ३६ बापीकूपतड़ागखनि
देवालयरचिदीन ॥ द्रुमरोपणपुहुमीकियो तिनकहँमग
सुखभीन ३७ ॥ सोरठा ॥ योजनिविंशतिपांच कालनि
शाघनघोरहै ॥ अतिहितिमिरतहँसाँच सूझिपरतनहिं
दिशिविदिशि ३८ ॥ दोहा ॥ दीपकदानहिदीजिये भये
मृतकपश्चात ॥ महानिशाभयकारमें कहुँकहुँसोइलखा
त ३९ गर्जतप्रलयपयोदतहँ घोरधारबहवारि ॥ गोपद
समसोतरिसकैदेइजुधेनुविचारि ४० तीर्थाटनपूजनसु
रनगजअरुबाजीदानि ॥ तिनकहँदुखसपनेनहीं पारजा
हिंसुखमानि ४१ योजनसहससुवारियुत कृमिसंकुलद
रशात ॥ भूमिदानजोदेइजग सोतहवाँतरिजात ४२ आ
गेसहसपचीसपुनि योजनशिखीकराल ॥ व्याकुलक्षु
धापियासयुतहोवैतहँमहिपाल ४३ विविधदानजोदेइ
नर अन्नआदिसुखपाइ ॥ दानमानकरअमितफल सो
तिहिथलतरिजाइ ४४ सहसछियासीयोजनै अगमपंथ
विकराल ॥ जियालालसबकामतजि रामचरणभजुहा
ल ४५ ॥ छन्दहरिगीत ॥ वैतरणिआगेसोहदारुणदुसह

भयकिमिगाइये । जहँयूपशोणितधारभारीपारवारनपा इये ॥ विस्तारयोजनसहसतासुगँभीरयोजनतीसहै । तिहिमांझमहमलमांसताकोकूलयोजनबीसहै ४६ ॥ छन्दतोटक ॥ नहिंसूझतहाथपसारतहां । सुखपुण्यनपापिनकष्टमहां ॥ तिहिहेतहिश्यामगऊजुदये । पदगोसमसोजनपारभये ४७ जिनतीरथसागरआदिकियो । व्रतवेदहियेनिजधारिलियो ॥ सतवादिहियेधमधारकहैं । वयतारणितासुखकारकहैं ४८ ॥ दोहा ॥ पापीक्रिमिसंकुललखैं सुकृतीपुटमयदेख ॥ पापिनकहँअतिदुखदसरि पुण्यनसुखदविशेख ४६ पापीतहँबहुदुखलहत बूड़तपुनिउतरात ॥ विष्ठापलक्रिमिरुधिरयुत भरतभवनअकुलात ५० यथायोगफलदेतहैं यमभटसुनुमहिपाल ॥ दानइतहिजोदेइनरपावैतहँतिहिकाल ५१ दानदियेजगयशलहै हैपरलोकउबार ॥ धर्मसदारक्षकजगत धर्महिसबसुखसार ५२ कुलकुटुम्बपरिवारधन देहअपनिकहजोइ ॥ जियालालबिनधर्मके सुखदायकनहिंकोइ ५३ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतोपा-
ख्यानेजियालालद्विजकृतेभाषायांमहामार्गसंख्या
वर्णनोनामैकोनविंशोऽध्यायः १६ ॥

दोहा ॥ अपरकथाअवसुनहुमुनि धार्मिकलोगनकाहँ ॥ कोमलनिर्मलसरिणहै रम्यविटपघनछाहँ १ पुष्पितफलितसुगंधयुत पादपकूपतड़ाग ॥ दधिघृतपययुतसरितशुभ अशनअमियफललाग २ तहांविमानसुलखियबहु पन्थस्वल्पदुखनाहिं ॥ तहांदानइकएकके मिलहिं कोटिमगमाहिं ३ सुनहुअपरइतिहासमुनि अघनाशक

सुखखानि ॥ धर्मास्पदपुष्करसहस समसदमुनिउड़जा
नि ४ सोहजलजसमधर्मपति शरजासनपृथुभाव ॥ नै
कअर्चिमालिहिरसम अर्काङ्गजपुरलाव ५ तप्नतनंधय
देखिके दोहदवत्सबढ़ाइ ॥ जीवनजासनपोतमिलि भू
रिहर्षउरलाइ ६ ॥ चौपाई ॥ सिंहासनमुनिकहँबैठाई ।
चरणधोइनिजभवनसिंचाई ॥ बहुतभांतिमुनिकहँसन
माने । पोड़शभांतिपूजिसुखमाने ७ अरुणसुवनकहको
मलबानी । पिंगलसममरीचिगुणखानी ॥ आजुजन्म
ममसुफलविशेखी । हेमुनिनाथचरणतवदेखी ८ पूरण
कामभयेममआजू । आयेआपसकलसुखसाजू ॥ सुनि
रविसुतमुखकोमलबानी । बोलतभेनारदमुनिज्ञानी ९
आयउँतवदर्शनकेहेता । धर्मराजतुमधर्मनिकेता ॥ गग
नविमानदेखितिहिबारा । चलेसभासुरधर्मभुवारा १० बा
जदुन्दुभीघनसमसोहत । चामरध्वजपताकमनमोहत ॥
मुक्तहारमणिमालविराजे । अप्सरगंधर्वकिन्नरसाजे ११
तियनसहितसबसुरसमुदाई । आयेधर्मसभामहँधाई ॥
तालमृदङ्गवीणबहुबाजत । कङ्कणकिङ्किणिनूपुरबाज
त १२ नृत्यतसबप्रकारगतिगहिकै । निरखतसकलस
भामुदलहिकै ॥ नरकिन्नरसुरसहितसमाजा । राजतधर्म
सभामहँराजा १३ ॥ दोहा ॥ आयेबासवतिहिसमय ऐ
रावतअसवार ॥ चामरव्यंजनढुरतबहु सोहतमुक्ताहा
र १४ सुनोधर्मआवतकऊ मन्दिररहेलुकाइ ॥ रत्नाक
रिबेहेतनिज दीन्हेदूतपठाइ १५ चणकमात्रकंपितरहे
पुनिअनुगनअसकाह ॥ आवतबासवमिलनहित सुनि
निकसेसउछाह १६ कहनारदतबइन्द्रसन तुमलखिध

मभयकीन ॥ यहअचरजकीबातहै भवनलुकेसुखही
न १७ धर्मराजतहँआइकै इन्द्रसहितसबदेव ॥ भेंटिप
रस्परसबनकहँ अर्घपाद्ययुतसेव १८ बैठेसबआसनसु
भग बोलेनारदबैन ॥ अमितपराक्रमिधर्मतुम विष्णुतु
ल्यतपऐन १९ सकलसुरासुरकरतभय हेत्रिभुवनपति
धर्म ॥ छिपेभवनकिमितपिषतहौ कहिमेटहुममभर्म २०
सुनिनारदकेबैनये धर्मराजमतिमान ॥ सुनहुदेवऋषिक
रतहम तुमसोंकथाबखान २१ मृत्युलोकमहँजनकइक
सत्यधर्ममयभूप ॥ अश्वमेधतिनपूर्वकृत दियद्विजदान
अनूप २२ सत्यधर्ममयतासुबल इन्द्रीजितछविखा
नि ॥ प्रजापालमदमोहजित कामक्रोधकीहानि २३ आ
युक्षीणबिनमृत्युनहिं तीनिअवस्थाहानि ॥ चीरकपश्री
सहितभू प्रजानेमधर्मखानि २४ वेदपंथरतनारिनर रा
मभक्तिउरधारि ॥ सत्यावतिनृपतीयवर सुन्दरशुचिसु
कुमारि २५ शुभलक्षणसम्पन्नसोधर्मपतिव्रतधार ॥ म
नक्रमवचसेवतचरणपतिआयसुअनुसार २६ पतिसु
खलखिसुखकोलहत पतिदुखलखिदुखकार ॥ लखिक्रो
धितअस्तुतिसहित मञ्जुलवचनउचार २७ मृगनैनी
पिकबैनिसो निजपतिकोसुखदानि ॥ आवतभईविमान
चढ़िएकसमयछविखानि २८ इन्द्रलोककहँजातभेश
क्रमिलेउठिधाइ ॥ बहुरिविमानचलाइकैपहुँचीविधि
पुरजाइ २९ ॥ छन्दनरेन्द्र ॥ कमलासनआसननिजत
जिकैकीनदण्डवतधाई । बहुरिविमानचलाइतहांतेमम
पुरकाहँसिधाई ॥ पतिव्रतासोअतितपतेजासहेनहमभ
यमानी १ द्वारपालप्रियवचकहिरोकीबहुविधिअस्तुति

ठानी ३० सुनहुमातुतवतपबलदेखीमन्दिरधर्मलुकाने । करिदण्डवतविनयबहुश्रास्थितकहिइहिभाँतिबखाने ॥ पतिव्रतागैइन्द्रलोककहँगयेदूतममपासा । तबतेहमदूतनदियआयसुरहतपुरीचहुँश्रासा ३१ ॥ दोहा ॥ हम अधीनतापसनके तपकेचेरेजान ॥ नारदमुनियेअपर अब तुमसोंकरतबखान ३२ ॥ छंदरामगीतिका ॥ अस्त्र शस्त्रनधारिममभट धावदिगदशमाहिं । मनहुधावतकुधरकज्जलपक्षयुतहरषाहिं ॥ वैतरणितटकष्टपापिनकहि नहमसोंजात । रुधिरकृमितहँबहतकिंकरकरतश्रायुधघात ३३ ॥ दोहा दुराचारिश्रासाहनी व्रतभंगीअघखानि ॥ निन्दकमिथ्यावादिनै दीपवतीदुखदानि ३४ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतो-
पाख्यानेजियालालद्विजकृतेभाषायांनारदधर्म
संवादोनामविंशोऽध्यायः २० ॥

दोहा ॥ सुनहुकथामुनिअपरअब कर्मशुभाशुभकारि ॥ त्रिजगयोनिशुभयोनिमें लेतजीवतनुधारि १ योनिलक्षचौरासिभ्रमि मिलतमनुजतनुश्राइ ॥ सोतनुलहिशठनीचजग देतवृथाहिबिताइ २ बिनासुकर्मनपापकरि परतनरकबहुवार ॥ धेनुघातिचौरासिभ्रमि तनुचाण्डालकधार ३ ॥ छन्दगोपाल ॥ व्याधिग्रसिततनुहोतअपार । परतियरतशूकरतनुधार ॥ विप्रवेदविक्रयरतजौन । शूद्रयोनिमहँजन्मततौन ४ भगिनीसनक्रीड़ाकृतजेइ । पंगुलह्वैदुखपावैतेइ ॥ होइमूकज्वरदाहसदाइ । जिनयहपापकियोतनुपाइ ५ तनुजावधहिंजौनअघखानि । उपघनयूपलहैंदुखदानि ॥ बहुरिमूत्रविष्ठाकृमिसोइ ।

विग्रहरजकहारपटहोइ ६ घातकस्वामिउपलकृमिजानु। पुनिपुनिकृमिपुनिपुनिकृमिमानु ॥ सनरुकपासकासहरजौनें। विप्रवस्तुहारकअघभौन ७ तेजड़वारिजीवतनुधार। कुष्ठीहोतअघीघृतहार ॥ तदुपरिउरगवपुषलहसोइ। अयुतजन्मभरिबहुदुखहोइ ८ जलहारकनरहोतपिशाचं। त्रिजगयोनिपावतदुखसाँच ॥ तैलहारतेलीतनुपाव। गन्धपुष्पफलजौनचुराव ९ बहुदुर्गन्धश्वानमुखतेहि। पशुहतअन्धसत्तजनुलेहि ॥ लोभपापरतमृगतनुपाव। क्रूरचित्ततनुनकुलकहाव १० वैश्वदेवबिनुकरतअहार। काकसंहननसोनरधार ॥ महादानभङ्गतनरजोइ। वनकोकिलवपुपावतसोइ ११ मातुपिताद्रोहीशठजौन। बकुलाउपघनलहतसुतौन ॥ मक्षिकतनुलहकलहीनारि। पतिवचहनजलौकवपुधारि १२ पुटहारकखगशूकरहोइ। सतीसर्पद्विजसतहरजोइ ॥ ताम्रकांस्यहरमेषशरीर। कन्दमूलहरचक्रिअधीर १३ ग्रामसिंहहुंवहरतावेद। जन्मजन्मशठपावतखेद ॥ जांगलभक्षिस्यारतनुहोइ। बहुरिकाकतनुपावतसोइ १४ वृषादेतगृहकाननजौन। पंगुलहोततीनिजनितौन ॥ पद्यपजौनविप्रअघखानि। लहकौलेयधामदुखदानि १५ मन्त्रहीनकहँमन्त्रजुदेत। मांजारत्रैउद्भवलेत ॥ पुष्पितफलितकाटतरुजोइ। कुक्कुटह्वैजन्मैजगसोइ १६ कुलघातहुकुलरतिकृतजौन। भालुदेहजबलगिजगतौन ॥ देत्दानवर्जतहैंजेइ। मातुपितागुरुद्वेषीतेइ १७ धर्म्मशास्त्रनिन्दकअघखानि। जन्मसहसरासभजगआनि ॥ मिष्टखद्नकृततजिपरिवार। सोभवपवनाशनतनुधार १८

पूजनसुरबलिकाकनदीन । तीरथजापहोमनहिंकीन ॥
बहुतभांतिपालीनिजदेह । गुरुविप्रसनकीननलेह १९
आलसवशतनदियोबिताइ । तनतजिपरेनरकमहँजाइ ॥
तीर्थदेवजिनपूजनकीन । तनतजिमारगहरिपुरलीन २०
संयमनियमकरतजिहिभांति । सोतिहिभांतितिनथल
जाति ॥ नाशकेतकहसुनहुमुनीश । इहिप्रकारहमअग
णितदीख २१ कर्मकरतजोजिमिमुनिराइ । चित्रगुप्तति
मिलिखतबनाइ ॥ सुनिइहिभांतिधर्ममुखवानि । नारद
मुनिबोलेसज्ञानि २२ ॥ दोहा ॥ भयोहमहिंसन्देहअति
सूर्यपुत्रबलवान ॥ सुरकिन्नरगन्धर्वनर तवयशकरहिंब
खान २३ द्वादशरविसमतेजतव जातरूपसमदेह ॥ कि
हिकारणमुखश्यामतव कहोकृपाकरियेह २४ ॥ सोरठा ॥
सुनिनारदकेबैन हर्षितबोलेधर्मतव ॥ सुनुमुनीशबुधि
ऐन कहौंकथासमुझाइकै २५ सत्यावतितपरूप पति
व्रताबुधिज्ञाननिधि ॥ जिहिध्यावहिंसुरभूप इन्द्रियजि
तहरिभक्तिरत २६ धर्मयज्ञबहुकीन ज्ञानरुविज्ञानाम्बु
निधि ॥ योगध्यानमनदीन कामादिकनबिहाइकै २७
चलीपरमपदसोइ सुनुमुनीशमनलाइकै ॥ इतआवत
सबकोइ पीछेकर्मनफललहै २८ तासुतेजवपुमोर जर
नलगोसोजरतलखि ॥ रत्नाकरीबहोरि शीतलभोममगा
ततब २९ ॥ दोहा ॥ मालामुद्रारुद्रहरि धर्मशास्त्रप्रिय
जाहि ॥ द्वैमन्वन्तरभोगते अमरावतिकमाहि ३० जब
तेममसुखश्यामभो रहौंतपितनिजभौन ॥ यहसुनिना
रदहर्षिमन करतभयेतबगौन ३१ ॥ छंदरामगीतिका ॥
सकलसुरतबसभामाधिसोंगयेनिजनिजभौन । नाशके

लखानकीन्होमुनिनपहँसवतौन ॥ व्यासशिष्यसुनाव नृपकोसोइशुभइतिहास । जियालालप्रबन्धभाषाकीन वाणिविलास ३२ सुनहिजोयहकथासुन्दरिभक्तियुतइति हास । सर्वपापनशाइँताउरकरहिंश्रीहरिवास ॥ सुनैजा मुखकथायहसुचिकरैपूजनतासु । पुष्पादिव्यच्चढ़ाइपावै अमितफलसोआसु ३३ ॥ दोहा ॥ विद्यार्थीविद्यालहैपुत्रा र्थीसुतपाव ॥ अर्थार्थीअर्थहिलहै जोयहसुनैसुनाव ३४॥

इति श्रीपद्मपुराणेवैशम्पायनजनमेजयसंवादेनाशकेतोपाख्याने जियालालद्विजकृतेभाषायांशुभाशुभकर्मकृतजन्मावलोकनो नामैकविंशोऽध्यायः २१ ॥

दो० जलधिकालमण्डपजलजअब्दमासनभकाम ॥
तिथिपुष्कलवारिजसुवन वाराधिकबुधिधाम १
सियपतिकोटस्थानहै जियालाल अस नाम ॥
सागर हरिपादोदकी शोहद पूरण काम २
समाप्तोऽयंग्रन्थः ॥

इति ॥

मुन्शी नवलकिशोर (सी,आई, ई) के छापेखाने में छपा
जनवरी सन् १९०७ ई० ॥

कठवल्ली उपनिषद् ॥

इस उपनिषद् में गुरु शिष्यसंवाद द्वारा श्रीवाजश्रवा ऋषीश्वर के पुत्र श्री उद्दालक ऋषिने जिस प्रकार से विश्वजित्नामा यज्ञ की और उसी यज्ञ के दक्षिणा में ऋत्विजादि ब्राह्मणों को अपरिमित धन व गौओं को दानदिया और उसी यज्ञ में अपने परम प्रिय पुत्र ज्ञानशिरोमणि श्रीनचिकेता को मृत्यु के अर्थ दानदिया और नचिकेता यमालय में गया और मृत्युने सावधान पूजन किया और परस्पर वार्त्तालाप हुआ वह सबवृत्त संवित मंत्रों में वर्णित है ॥

माण्डूक्योपनिषद् ॥

ॐकारस्वरूपका प्रतिपादन व ब्रह्मकी आत्माकी अभेदता का निरूपण आगम, यवैताख्य, अद्वैताख्य, व अलातशान्ताख्य इन चार प्रकरणों में निरूपण कियागयाहै अवलोकन करनेयोग्यहैं जो अब छापी जाती हैं ॥

तैत्तिरीयोपनिषद् ॥

यह उपनिषद् यजुर्वेदसम्बन्धी है—इस उपनिषद्में श्रीसच्चिदानन्द घन परब्रह्म परमेश्वर निराकारके साकार रूप होने का प्रतिपादन है ॥

मैत्रेयोपनिषद् ॥

यह उपनिषद् ऋग्वेदके ब्राह्मणभाग से सम्बन्धित है—इस में मुख्य ब्रह्मविद्याका वर्णनहै ॥

ईशावास्योपनिषद् ॥

जिसे वाजसनेयी संहिताभी कहते हैं—इस उपनिषद्में यावत् नाम रूपात्मकजगद्भाव है सब ईशही में घटित किया है ॥

केनोपनिषद् ॥

अब इसबार अत्यन्त शुद्धतापूर्वक सरलभाषा तिलकसे युक्त मुद्रितकी जातीहै—इसमें आत्मविद्योपदेश श्रीप्रजापतिद्वारा वर्णन किया गयाहै ॥

छान्दोग्यउपनिषद् ॥

इस उपनिषद्में इन्द्रियादिकों के संघात बिषे स्थित प्राणों की ज्येष्ठता व श्रेष्ठताका एक आख्यायिका द्वारा प्रतिपादन है—मन्त्रों के नीचे सरल देशभाषामें सुन्दर तिलक कियागया है ॥